उच्च शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षण-कौशल मॉड्यूल

डॉ. सुनील कुमार सिंह

उच्च शिक्षा में जो भी व्यक्ति शिक्षण-कौशलों के बारे में पढ़ने और सीखने-सिखाने में रुचि रखते हैं, उनके लिए सभी विषयों जैसे- विज्ञान, गणित, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान तथा भाषा आदि में शिक्षण हेतु कुशलतापूर्वक विषय ज्ञान संप्रेषित करने के लिए यह मॉड्यूल एक संतोषजनक पठनीय एवं अनुकरणीय सामग्री है। इससे न केवल उच्च शिक्षा के शिक्षकों को लाभ होगा, बल्कि उन सभी व्यक्तियों को लाभ होगा जो किसी विषयगत-वस्तु पर किसी विशेष श्रोता को ज्ञान प्रदान करने के लिए इन शिक्षण-कौशलों का उपयोग करके अपनी संचार क्षमताओं को अधिक प्रभावी बनाना चाहते हैं। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए शिक्षण एवं मृदु कौशलों को यहाँ एक स्व-निर्देशात्मक मॉड्यूल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाठक मॉड्यूल की विभिन्न इकाइयों एवं उनसे सम्बंधित अनुभागों में दिये गए किसी भी कौशल/कौशलों को अलग-अलग या एकीकृत तरीके से अभ्यास कर सकते हैं। इनके यथोचित उपयोग द्वारा प्रत्येक शिक्षक सुगमता से दक्षतापूर्वक प्रभावी सम्प्रेषण करने में सक्षम हो सकेगा। इसके साथ ही, यह मॉड्यूल शिक्षक को शिक्षण वृत्ति को दक्ष बनाने में सहयोग प्रदान करेगा।

उच्च शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षण-कौशल मॉड्यूल

स्व-अनुदेशन हेतु ई-मॉड्यूल

डॉ. सुनील कुमार सिंह

वरिष्ठ आचार्य, शिक्षा संकाय

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

वाराणसी-221005, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रथम संस्करण : अक्टूबर, 2024

प्रकाशन: डिजिटल डाउनलोड और ऑनलाइन

पुस्तक का नाम: उच्च शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षण-कौशल मॉड्यूल

ISBN : 978- 93-341- 4997- 5

संपादक : Sunil Kumar Singh सुनील कुमार सिंह

विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश धर द्विवेदी, यू.पी. कॉलेज, वाराणसी
प्रो. सुजाता साह, वसन्त कॉलेज फॉर वूमेन, राजघाट, वाराणसी
प्रो. आशा पाण्डेय, वसन्त कॉलेज फॉर वूमेन, राजघाट, वाराणसी
डॉ. रमेश कुमार, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
डॉ. अशोक कुमार, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
डॉ. सत्यपाल शर्मा, हिंदी विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. पी.सी. अभिलाष, आई.ई.एस.डी., बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. कौशलेन्द्र सिंह, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, वाराणसी
डॉ. सोमू सिंह, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. विनोद कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. अजय कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. पंकज सिंह, शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. पूजा सिंह, वरिष्ठ कंसलटेंट, नीपा, नई दिल्ली
डॉ. नीरज, शिक्षा विभाग, नागरिक पी.जी. कॉलेज, जंघई, जौनपुर

पाठ्य-सामग्री लेखन समूह

डॉ. सुनील कुमार सिंह, वरिष्ठ आचार्य, शिक्षा संकाय ,बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. शशि कुशवाहा, रिसर्च असिस्टेंट, आई.ओ.ई-बी.एच.यू. प्रोजेक्ट, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. राय पूनम विनोद कुमार, रिसर्च असिस्टेंट, आई.ओ.ई- बी.एच.यू. प्रोजेक्ट, बी.एच.यू., वाराणसी
डॉ. आलोक द्विवेदी, रिसर्च असिस्टेंट, आई.ओ.ई-बी.एच.यू. प्रोजेक्ट, बी.एच.यू., वाराणसी
श्रावण कुमार कुशवाहा, यू.जी.सी.-जे.आर.एफ., शिक्षा संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी

कॉपीराइट : डॉ. सुनील कुमार सिंह, **संपादक**

(इस मॉड्यूल में निहित पाठ्य- सामग्री को उच्च शिक्षा के शिक्षकों, परामर्शदाताओं और विभिन्न साहित्य के स्रोतों में सुझायी गई विषय-वस्तु को ध्यान में रखकर लेखक समूहों की सहायता से विकसित किया गया हैं। इसकी स्वीकृति इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस- बी.एच.यू प्रोजेक्ट के वित्त पोषित परियोजना के अंतर्गत मई 2021 में की गयी)

प्रकाशक : प्रो. सुनील कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005, उत्तर प्रदेश, भारत, सम्पर्क- 7985894168, 9450580931, ई-मेल sunil.kr.edu@gmail.com

उच्च शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षण-कौशल मॉड्यूल : एक परिचय

- **मॉड्यूल का परिचय**
- **मॉड्यूल संरचना**
- **मॉड्यूल इकाइयाँ**

इस मॉड्यूल का परिचय :

यह मॉड्यूल उच्च शिक्षा के शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं जिज्ञासुओं के लिए निर्मित किया गया है। इस मॉड्यूल का एकमात्र उद्देश्य पाठक को उच्च शिक्षा में शिक्षण-अधिगम की प्रकिया में उपयोग के लिए उपयुक्त शिक्षण-कौशलों से परिचित कराना है। यह शिक्षार्थी के संचार और अन्य मृदु/मधुर (सॉफ्ट) कौशलों को बढ़ाने के साथ-साथ कक्षा में प्रभाविता को भी बढ़ाने में सहायक होगा। यह सब समग्र रूप में शिक्षक/पाठक को शिक्षण वृत्ति में अधिक सक्षम बना सकेगा।

नीचे के भागों में मॉड्यूल से सम्बंधित संरचना और इकाइयों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

मॉड्यूल संरचना:

यह मॉड्यूल शिक्षण-कौशल से संबंधित विकसित सामग्रियों का एक क्रमबद्ध लेखन संग्रह है, जिसे उच्च शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण हेतु शिक्षण कौशल सीखने के लिए विकसित किया गया है। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पक्ष सम्मिलित हैं :

I. सीखने का परिणाम।
II. उपयोग के लिए निर्देश।
III. शिक्षार्थी को पढ़ने, समझने और सीखने में मदद करने के लिए शिक्षण सामग्री।

IV. शिक्षार्थी द्वारा पढ़ी गई सामग्री को सीखने के बारे में स्वयं का आंकलन करने के लिए स्व-जाँच अभ्यास।

V. शिक्षार्थी को सोचने, चर्चा करने, लिखने और अभ्यास करने में मदद करने के लिए चर्चा के बिंदु।

मॉड्यूल इकाइयाँ :

यह शिक्षण मॉड्यूल निम्नलिखित दो इकाइयों में विभाजित है।

इकाई- 1 : 'प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण कौशल' से संबंधित है।

इकाई- 2 : 'शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास के लिए मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)' से संबंधित है।

उपरोक्त प्रत्येक इकाई में सामान्यत: निम्नलिखित तथ्य सम्मिलित हैं:

1. आपके पढ़ने, समझने और अन्वेषण देखने के लिए सामग्री,
2. अवधारणाओं और संसाधनों के साथ काम करने की अनुमति देने के लिए एक स्व-जाँच अभ्यास; और
3. एक गतिविधि, जैसे कि चर्चा- जहाँ आप एक छोटे समूह में अन्य शिक्षार्थियों/शिक्षकों/साथियों के साथ बातचीत करते हैं।

विषय- सूची

इकाई संख्या	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	शिक्षण-कौशल मॉड्यूल का औचित्य और सीखने के परिणाम	**1-3**
	• औचित्यकरण • मॉड्यूल की इकाइयाँ और सीखने के परिणाम	
इकाई-1 :	**प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण कौशल**	**4-66**
	1.0 परिचय	4
	1.1 अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को लिखने का कौशल	6
	1.2 पाठ- प्रस्तावना का कौशल	16
	1.3 पुनर्बलन का कौशल	21
	1.4 उद्दीपन परिवर्तन का कौशल	27
	1.5 व्याख्या का कौशल	37
	1.6 प्रश्न पूछने का कौशल	42
	1.7 प्रदर्शन का कौशल	50
	1.8 लेखन-बोर्ड/श्यामपट्ट प्रयोग करने का कौशल	53
	1.9 उदाहरणों के साथ दृष्टांत देने का कौशल	58
	1.10 समापन करने का कौशल	63
इकाई-2 :	**शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास के लिए मृदु/मधुर कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)**	**67-77**
	ग्रंथ-सूची और पठनीय पुस्तकों का विवरण	**78-79**

शिक्षण-कौशल मॉड्यूल का औचित्य और सीखने के परिणाम

- **औचित्यकरण**

शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच शिक्षण के कार्य के बारे में सामान्यत: धारणा यह है कि, इसमें केवल विषय सामग्री को सीखना और उसे कक्षा में शिक्षार्थी तक पहुंचाना शामिल है। हालाँकि, इसे शिक्षार्थी तक संप्रेषित करना और सामग्री वितरण के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। संप्रेषण के बिना शिक्षण नहीं हो सकता। इसलिए, प्रभावी ढंग से संवाद करें, शिक्षण के विभिन्न कार्यों को करने के विशिष्ट तरीके हैं। इन विशिष्ट तरीकों को शिक्षण कौशल के रूप में जाना जाता है। इन शिक्षण कौशलों को पूरा करने के लिए शिक्षण में सीखने की गतिविधियों की समय पर योजना बनाना, उपलब्ध संसाधन को व्यवस्थित करना और नियमित मूल्यांकन भी शामिल है। शिक्षण के ये सभी चरण शिक्षण की विभिन्न अवस्थाओं (शिक्षण की पूर्व-सक्रिय, अंत:क्रियात्मक और पश्च-क्रियात्मक अवस्था) के दौरान महत्वपूर्ण हैं, यह सभी अनिवार्य रूप से मूलभूत स्तर से लेकर उच्च स्तर की शिक्षा में समान रूप से होते हैं।

आज उच्च शिक्षा के इच्छुक अभ्यर्थियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसी कारण यह, उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षण एक चिंता का विषय है। इसलिए, उच्च शिक्षा में शिक्षकों को एक साथ दो संशोधन की आवश्यकता है अर्थात विशेषज्ञता की विषय सामग्री में (क्या पढ़ाएँ?), और शिक्षण कौशल (कैसे पढ़ाएँ?), का समायोजन इसलिए, हाल के दशकों में शिक्षण कौशल की मांग ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है। इसलिए इस मॉड्यूल का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा में शिक्षकों की इस आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह इससे उन सभी विद्वानों को सुविधा होगी जो विश्वविद्यालयों में नए हैं, हालाँकि, इससे

उन्हें भी मदद मिलेगी जो अनुभवी हैं और अपने प्रचलित शिक्षण-अधिगम अभ्यास पर विचार करना चाहते हैं।

मूलतः सभी शिक्षक, चाहे वे नये या अनुभवी हों, उनको अपने शिक्षार्थी की समझ और सीखने की सुविधा के लिए जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक शिक्षण-कौशलों द्वारा अपने विद्यार्थियों को सीखने के लिए व्यस्त और प्रेरित रखने में मदद करता है। अतः एक शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए उत्कृष्ट शिक्षण-कौशलों की आवश्यकता होती है। ये क्षमताएँ उसे अपने विद्यार्थियों को सीखने में संलग्न करने और प्रेरित रखने में सहायता करती हैं। इन शिक्षण-कौशलों के रुप में दृढ़ और मृदु/मधुर दक्षताएं विद्यार्थियों को व्यस्त रखने में मदद करती हैं। ये क्षमताएं शिक्षकों में स्वयं अपने आपको शिक्षक के रूप में स्थापित करने तथा अपने विद्यार्थियों का सम्मान और ध्यान आकर्षित करने में भी मदद कर सकती हैं। कुछ शिक्षण-कौशल कुछ लोगों में स्वाभाविक रूप में होते हैं, जबकि अन्य के लिए अभ्यास की आवश्यकता हो सकती है। उनको अर्जित कर एवं प्रयोग करके कोई भी शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को अधिक सरल, सुगम एवं सफल बना सकता है।

शिक्षण-कौशलों से सम्बंधित यह मॉड्यूल उच्च शिक्षा के शिक्षकों को निम्नलिखित प्रश्नों को हल करने में भी मदद करेगा:

1. उच्च शिक्षा के शिक्षण में क्या-क्या सम्मिलित है?
2. उच्च शिक्षा में प्रभावी शिक्षण के बारे में हुए शोध के साक्ष्य हमें क्या बताते हैं?
3. उच्च शिक्षा में शिक्षार्थियों के लिए सामान्य शिक्षण परिणाम क्या हो सकते हैं?
4. हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे शिक्षण कौशल/विधियाँ हमारे विद्यार्थियों को वांछित अधिगम परिणाम प्राप्त करने में मदद करेंगी?
5. हमारे शिक्षण को सफल बनाने के लिए हमारे पास कौन से शैक्षणिक विकल्प हैं?

6. कौन से मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि अभ्यास हमारे विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में मदद कर सकते हैं?

- **मॉड्यूल की इकाइयाँ और सीखने के परिणाम**

इस मॉड्यूल में निम्नलिखित इकाइयाँ हैं-

इकाई संख्या	इकाई शीर्षक
1.	प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण-कौशल
2.	शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास के लिए मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)

इस मॉड्यूल की इकाइयों में निहित शिक्षण सामग्री के अध्ययन और अधिगम सम्बन्धित कार्यों को पूरा करने के बाद आप निम्न परिणाम में अपने को सक्षम कर पायेगें :

- विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषय अवधारणाओं का सर्वोत्तम अधिगम सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शिक्षण कौशलों की पहचान करना।
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों में विविध शिक्षण कौशलों के उपयोगों को बताना।
- नए शिक्षण कौशल को प्राप्त करना और पुराने को परिष्कृत करना।
- अपनी शिक्षण पद्धति में नए शिक्षण कौशलों को सीखना और आत्मसात करना।
- शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों से संबंधित विशेषताओं और उपयोगों के संदर्भ में विभिन्न शिक्षण कौशलों में अंतर करना।
- शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक विभिन्न मृदु/मधुर कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) की पहचान करना, आत्मप्रेरित हो पाना एवं अन्य जिज्ञासुओं में शिक्षण-कौशलों का प्रसार करना।

इकाई -1

प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण कौशल

1.0 परिचय

शिक्षण संसार की सर्वोत्तम वृत्तिओं में शीर्ष स्थान रखता है। शिक्षण कार्य अत्यंत रुचिकर होने के साथ हीं चुनौतीपूर्ण भी होता है। शिक्षार्थी में सीखना उसके प्रयासों और इच्छा पर निर्भर करता है, लेकिन सीखने की प्रेरणा और आनंददायी अनुभव शिक्षक द्वारा सुगम बनाया जाना चाहिए। साथ ही, शिक्षक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह सुनिश्चित करे कि शिक्षार्थी वास्तव में निर्धारित समय के भीतर शिक्षण लक्ष्यों को अच्छी तरह से प्राप्त कर पाए। इसलिए शिक्षक की आत्म-जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है और शिक्षक को समय-समय पर शिक्षण-अधिगम कौशलों को अद्यतन और परिष्कृत करना होता है। यह बात शिक्षा के सभी स्तरों के लिए सामान रूप से लागु होती है।

यदि शिक्षक कक्षा की चुनौतियों को सहजता से स्वीकार कर ले तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एक आनंदपूर्ण गतिविधि बन जाती है। शिक्षक शिक्षार्थियों के बीच अधिगम को सुगम बनाने के लिए विभिन्न क्रियाएं करता है। इन गतिविधियों या क्रियाओं में बातचीत, बोर्ड पर लिखना, आकृतियां बनाना, वर्णन करना, उदाहरणों के साथ प्रदर्शन, प्रश्न पूछना आदि शामिल होते हैं। शिक्षक द्वारा किए गए संपूर्ण मौखिक और अशाब्दिक लेखन, आकृतियां बनाना, शिक्षण कौशल कहलाते हैं। इन शिक्षण कौशलों और उनके विभिन्न पहलुओं को देखा, परिभाषित और सत्यापित भी किया जा सकता है। इन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से अर्जित और परिष्कृत किया जा सकता है। शिक्षण निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए शिक्षण क्रिया शिक्षण व्यवहार के रूप में परिलक्षित होती है। इस पहलू में व्यवहार के कई परस्पर संबंधित घटक शामिल

होते हैं जिन्हें शिक्षण कौशल कहा जाता है। शिक्षक इन कौशलों का तीन शिक्षण-चरणों (शिक्षण-पूर्व, शिक्षण और शिक्षण-पश्चात) के दौरान व्यक्तिगत रूप से और परस्पर मिश्रित तरीके से अभ्यास करता है। यह शिक्षक को बताए गए उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करता है (जंगिरा और सिंह, 1982)।

इसलिए, विशेष रूप से शिक्षण कौशल को विशिष्ट शिक्षण कौशल के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो शिक्षार्थी के लिए बताए गए शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ निर्दिष्ट व्यवहारों को दर्शाता है। इन कौशलों को मुख्य शिक्षण कौशल भी कहा जाता है (पासी, 1976)। इन्हें इस प्रकार नामित किया गया है-

मुख्य शिक्षण-कौशल नीचे प्रस्तुत किए गए हैं-

1. अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को लिखने का कौशल
2. पाठ का प्रस्तावना कौशल (सेट इंडक्शन)
3. पुनर्बलन का कौशल
4. उद्दीपक परिवर्तन का कौशल
5. व्याख्या का कौशल
6. प्रश्न पूछने का कौशल
7. प्रदर्शन का कौशल
8. श्यामपट्ट का प्रयोग कौशल
9. उदाहरणों के साथ दृष्टांत देने का कौशल
10. समापन करने का कौशल

उपरोक्त शिक्षण कौशलों का वर्णन इकाई के आगामी अलग-अलग खंडों 1.1 से खंड 1.10 तक निम्नानुसार किया गया है-

1.1 अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को लिखने का कौशल

1.2 पाठ का प्रस्तावना कौशल (सेट इंडक्शन)

1.3 पुनर्बलन कौशल

1.4 उद्दीपक परिवर्तन कौशल

1.5 व्याख्या का कौशल

1.6 प्रश्न पूछने का कौशल

1.7 प्रदर्शन का कौशल

1.8 श्यामपट्ट का प्रयोग कौशल

1.9 उदाहरणों के साथ दृष्टांत देने का कौशल

1.10 समापन करने का कौशल

1.1 अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को लिखने का कौशल

प्रथम इकाई के इस खंड में उच्च शिक्षा के शिक्षण-अधिगम परिदृश्य हेतु अनुदेशनात्मक उद्देश्य को लिखने के कौशल (**अनुदेशनात्मक उद्देश्य लेखन कौशल)** का विस्तार से वर्णन किया गया है। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में इन उद्देश्यों को सीखने के परिणामों (**लर्निंग आउटकम्स**) के रूप में भी नामित किया जाता है।

- अनुदेशनात्मक उद्देश्य वांछनीय व्यवहारों का एक स्पष्ट, सटीक, विशिष्ट विवरण है। जो शिक्षण कार्य के बाद प्राप्त होने वाले सीखने के परिणाम को दर्शाता है। यह एक पतवार की तरह है, जो शिक्षक को विद्यार्थियों को उचित दिशा में ले जाने का निर्देश देता है।
- अनुदेशनात्मक उद्देश्य संपूर्ण शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को विशिष्ट और लक्ष्य-निर्देशित करने में सक्षम बनाते हैं। साथ ही साथ आकलन और मूल्यांकन में मदद करते हैं (केनेथ, 2001; राशिद, 1999)।
- व्यवहारपरक उद्देश्य को अनुदेशात्मक उद्देश्य भी कहा जाता है, क्योंकि यह निर्देश/शिक्षण के बाद शिक्षार्थी के प्रदर्शन को दर्शाता है। (किबलर, केगला, बार्कर और माइल्स, 1974; तथा डिक एंड कैरी, 1990)।

1.1.1 अच्छे अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का मानदंड

अच्छे शिक्षण/अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करना चाहिए।

- अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को विद्यार्थी के अवलोकन योग्य व्यवहार के संदर्भ में लिखा जाना चाहिए।
- अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को क्रिया रूप में प्रारम्भ होना चाहिए, जो पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थियों के व्यवहार रूप को दर्शाता है।
- अनुदेशनात्मक उद्देश्य एकात्मक होने चाहिए, प्रत्येक कथन केवल एक प्रक्रिया से संबंधित होना चाहिए।
- अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को सीखने के अनुभवों की एक नियोजित श्रृंखला के भावी प्रत्यक्ष परिणामों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।
- उपलब्ध समय के संदर्भ में अनुदेशनात्मक उद्देश्य यथार्थवादी होने चाहिए।
- अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को भविष्य काल में लिखा जाना चाहिए।
- शिक्षार्थी के प्रदर्शन के न्यूनतम अपेक्षित स्तर की विशिष्टता अनुदेशनात्मक उद्देश्यों में परिलक्षित होनी चाहिए।

1.1.2 अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का वर्गीकरण

उद्देश्यों को वर्गीकृत करने के लिए सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली प्रणाली ब्लूम, एंगेलहार्ट, फुर्स्ट, हिल एंड क्रथवोहल (1956) और क्रथवोहल, ब्लूम, एण्ड मसाई (1964) द्वारा विकसित वर्गीकरण है। इस प्रणाली को तीन प्रमुख श्रेणियों या सीखने के उद्देश्यों में विभाजित किया गया है-

1. संज्ञानात्मक उद्देश्य
2. भावात्मक उद्देश्य
3. क्रियात्मक उद्देश्य

1.1.3 संज्ञानात्मक उद्देश्य के स्तर

संज्ञानात्मक उद्देश्य में अधिगम का प्रयोजन तथ्यों के सरल स्मरण से लेकर सूचना के जटिल संश्लेषण और नये विचारों के निर्माण तक होता है। डॉ. ब्लूम ने संज्ञानात्मक उद्देश्य को छह श्रेणियों में विभाजित किया है, जिसमें सरल से लेकर जटिल कार्य शामिल हैं- जैसे ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन। हालाँकि, ब्लूम के दो उच्चतम स्तर, संश्लेषण और मूल्यांकन को एक 'रचनात्मक' स्तर में जोड़ दिया गया है।

1. ज्ञान स्तर

- ज्ञान अधिगम का तात्पर्य पूर्व में सीखी गई सामग्री के सरल स्मरण से है। इसमें तथ्य संबंधित शब्दावली, बुनियादी सिद्धांत और सामान्यीकरण का विशिष्ट स्मरण शामिल हैं।
- इस उद्देश्य का संबंध शब्दों, तथ्यों, नियमों, सूचनाओं, सिद्धांतों की सहायता से विद्यार्थियों की प्रत्यास्मरण तथा पहचान संबंधी क्रियाओं का विकास करने से होता है।

- इस उद्देश्य के द्वारा विद्यार्थियों में परम्परागत नियमों, सिद्धांतों, मानदंडों आदि का प्रत्यास्मरण एवं पहचान कराने के लिए अन्य परिस्थितियों का निर्माण भी किया जाता है।
- ज्ञान स्तर के उद्देश्यों को इस तरह की क्रियाओं के साथ व्यक्त किया जा सकता है जैसे- पहचानना, परिभाषित करना, सूची बनाना, मिलान करना, लिखना, वर्णन करना और प्रकट करना।

2. अवबोध स्तर

- अवबोध ज्ञान का वह स्तर है, जिसमें पहले से सीखी गई सामग्री के रूप को बदलना या सरल व्याख्या करना सम्मिलित होता है।
- अवबोध का तात्पर्य नवीन ज्ञान का विद्यार्थी की समझ में आना है। अर्थात् जिस पाठ्य-वस्तु के विषय में विद्यार्थी की प्रत्यास्मरण या पहचान की क्षमता विकसित हो जाती है, उसके संबंध में अनुभव, व्याख्या तथा उल्लेख आदि अनेक क्रियाएं अवबोध उद्देश्य के आधार पर कर सकते हैं।
- अवबोध स्तर के उद्देश्यों को इस प्रकार की क्रियाओं के साथ व्यक्त किया जा सकता है, जैसे- अनुवाद, रूपांतरण, व्याख्या, पुनर्लेखन, सारांश, व्याख्या और अंतर करना।

3. अनुप्रयोग स्तर

ज्ञान और बोध के पश्चात प्रयोग की ओर बढ़ा जाता है। प्रयोग उद्देश्य के भी तीन स्तर होते हैं-

(1) नियमों तथा सिद्धांतों का सामान्यीकरण,

(2) विद्यार्थियों की कमजोरियों का निदान करना; एवं

(3) विद्यार्थियों द्वारा पाठ्य वस्तु अथवा शब्दों तथा नियमों को अपने कथनों में प्रयोग करना। इसके अंतर्गत चयन करना, प्रदर्शन करना, दिखाना, निर्माण करना, गणना करना, प्रयोग करना, रचना करना, खोजना और

भविष्यवाणी करना, तैयारी करना, परिवर्तित करना आदि सम्मिलित होता है।

4. विश्लेषण स्तर

- ज्ञान अवबोध तथा प्रयोग के पश्चात विश्लेषण की ओर बढ़ा जाता है, दूसरे शब्दों में विश्लेषण तब ही संभव है जब ज्ञान हो तथा प्रयोग सम्बंधी उद्देश्य प्राप्त हो गए हों।
- विश्लेषण उद्देश्य के अंतर्गत पाठ्यवस्तु को तत्वों में विभाजित करके उनमें परस्पर संबंध स्थापित किया जाता है।
- इसके अंतर्गत विश्लेषण द्वारा ज्ञात किए गए तत्व को एकत्रित करके पूर्ण रूप प्रदान करते हुए एक नया ढांचा तैयार किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं का विकास होता है।
- इसके अंतर्गत- विश्लेषण करना, पृथक्करण करना, उदाहरण देना, संकेत करना, संबंध स्थापित करना, पहचानना, विभेदीकरण करना, आलोचना करना आदि सम्मिलित होता है।

5. संश्लेषण

- संश्लेषण को क्रियात्मक उद्देश्य भी कहा जाता है। प्राप्त किये गए नवीन विचारों या नवीन ज्ञान को जोड़ना, उन्हें एकत्रित करना अर्थात उसको जोड़कर एक नवीन ज्ञान का निर्माण करना संश्लेषण कहलाता है।
- इससे विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं का विकास होता है। इसके अंतर्गत योग करना, निष्कर्ष देना, पुनर्व्याख्या करना, सारांश लिखना, व्यवस्थित करना, सृजन करना, प्रारूप तैयार करना, संकलित करना, संगठित करना, वर्णन करना आदि सम्मिलित होता है।

6. मूल्यांकन

- मूल्यांकन ज्ञानात्मक पक्ष का सर्वोच्च स्तर है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

- इसके अंतर्गत पाठ्यवस्तु के नियमों, सिद्धांतों तथा तथ्यों के संबंध में आलोचनात्मक निर्णय लेकर परीक्षा अथवा अन्य प्रकार के मापदंडों द्वारा यह मालूम किया जाता है कि - (1) शिक्षण के निर्धारित उद्देश्य प्राप्त हुए हैं अथवा नहीं, (2) विद्यार्थियों में कक्षा के अंदर जो सीखने के अनुभव प्रदान किए गए, वे प्रभावोत्पादक रहे अथवा नहीं; एवं (3) शिक्षण के उद्देश्यों को कितने अच्छे ढंग से प्राप्त किया गया है।
- इसके अंतर्गत अवगत करना, तुलना करना, निष्कर्ष निकालना, आलोचना करना, सारांश देना, व्याख्या करना, निर्णय लेना, निर्धारण करना, मूल्यांकन करना आदि सम्मिलित हैं।

1.1.4 भावात्मक उद्देश्य के स्तर

भावात्मक उद्देश्य में अधिगम का प्रयोजन रुचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा संवेगों से सम्बंधित उद्देश्यों की व्याख्या करता है। इस स्तर को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया है, जिसमें सरल से लेकर जटिल कार्य शामिल हैं, जैसे- ग्रहण करना, अनुक्रिया, अनुमूल्यन, व्यवस्था तथा मूल्य समूह का विशेषीकरण।

1. **ग्रहण करना**
    - ग्रहण करने का आशय अधिगमकर्ता की जागरुकता और भाग लेने की इच्छा से है।
    - विद्यार्थियों की संवेदनशीलता से संबन्धित है जिसमें किसी क्रिया अथवा उद्दीपक की उपस्थिति में होती है।
    - इसके अंतर्गत बताना, पहचानना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, प्रत्यक्षीकरण करना, चयन करना, पसंद करना, सूचना देना आदि क्रियाएँ शामिल हैं। ग्रहण करने के तीन स्तर होते हैं-
        - क्रिया की जागरुकता,
        - क्रिया प्राप्ति की इच्छा,
        - चयन की योजना।

2. अनुक्रिया

- अनुक्रिया का संबंध सक्रिय भागीदारी से है। विद्यार्थी प्रेरित होते हुए नवीन ज्ञान को सक्रिय रूप से ग्रहण करता है।
- इसमें उद्दीपक पर ध्यान देना और उस पर स्वेच्छा से प्रतिक्रिया करना शामिल हैं।
- इसके अंतर्गत उत्तर देना, विकास करना, कथन करना, आलेखन लिखना, सूची बनाना, चयन करना, सहायता करना, संकलन करना, प्रस्तुत करना आदि क्रियाएँ शामिल होती हैं।

  अनुक्रिया के तीन स्तर होते हैं-
  - अनुक्रिया में सहमति
  - अनुक्रियाओं की इच्छा
  - अनुक्रिया में संतोष

3. अनुमूल्यन/मूल्य प्रदान करना

- इसका तात्पर्य उन मूल्यों से है जिनमें विद्यार्थियों की आस्था होती है तथा जिनको वह अपने जीवन में विशेष महत्व देते हैं। अर्थात् अनुमूल्यन किसी वस्तु, घटना या उद्दीपक की स्वीकार्यता से संबंधित हैं।
- इस स्तर पर विश्वास, प्रशंसा या दृष्टिकोण व्यवहार परिलक्षित होते हैं।
- इसके अंतर्गत स्वीकारना, भाग लेना, प्रभावित करना, पहचानना, वृद्धि करना, निर्णय लेना, प्रस्तावित करना, पूरा करना, मिलाना भाग लेना, दिखाना आदि क्रियाएँ शामिल होती हैं।

अनुमूल्यन के तीन स्तर होते हैं-

- मूल्य स्वीकारना
- मूल्य की प्राथमिकता
- वचनबद्धता

4. व्यवस्था

- व्यवस्था का संबंध मूल्य के क्रम को निर्मित और व्यवस्थित करने से है। अर्थात् आंतरिक रुप से सुसंगत मूल्य प्रणाली का निर्माण करना।
- इसके अंतर्गत क्रमिक रूप देना, परिवर्तन करना, संगठित करना, वर्णन करना, संशोधन करना, निश्चय करना, बनाना, समायोजन करना आदि क्रियाएँ शामिल होती हैं।

  इसके दो स्तर हैं-
  - मूल्य की अवधारणा
  - मूल्य क्रम की व्यवस्था

5. मूल्य समूह का विशेषीकरण

- इसके अंतर्गत विद्यार्थी के मूल्यक्रम में आंतरिकता आ जाती है।
- यह दो सामान्य समूह और विशेषीकरण रूपों में कार्य करती है।
- इसके अंतर्गत कार्य करना, हल करना, अभ्यास करना, स्वीकरना, प्रदर्शित करना, दुहराना, बदलना, प्रस्तावित करना, विकसित करना है।

1.1.5. क्रियात्मक उद्देश्य के स्तर

इस उद्देश्य के अंतर्गत शारीरिक और क्रियात्मक कौशल के समंवय का उपयोग शामिल हैं।

1. प्रत्यक्षीकरण

- यह ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तुओं के संबंध में रुचि तथा प्रेरणा के आधार पर जागरूक होने वाली प्रक्रिया है।
- इसके अंतर्गत वर्णनात्मक स्तर, संक्रमण काल की स्थिति, व्याख्यात्मक स्तर जैसे: निर्माण करना, चित्र बनाना शामिल हैं।

2. व्यवस्था

- यह उस प्रारंभिक समायोजन से संबंधित है जो विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं तथा अनुभवों के लिए किया जाता है।
- इसके अंतर्गत मानसिक स्तर, शारीरिक स्तर, संवेगात्मक स्तर जैसे: प्रारूप तैयार करना, बनाना शामिल हैं।

3. **निर्देशात्मक अनुक्रिया**
    - यह एक व्यक्ति के निर्देशन में दूसरे व्यक्ति का बाह्य व्यवहार है।
    - इसके अंतर्गत जटिल कौशल वाली क्रियाओं पर बल देना जैसे: पहचानना, स्थापित करना शामिल हैं।
4. **कार्य प्रणाली**
    - इस स्तर पर विद्यार्थी के अंदर किसी कार्य को करने के लिए आत्मविश्वास और कौशल विकसित होता है।
    - इसके अंतर्गत आत्मविश्वास और कौशल का विकास, उपर्युक्त अनुक्रियाओं में सहायक जैसे- अभ्यास करना, मरम्मत करना शामिल हैं।
5. **जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया**
    - यह क्रियात्मक पक्ष का सर्वोच्च स्तर कहा जाता है इस स्तर पर विद्यार्थी में इतनी क्षमता एवं कुशलता उत्पन्न हो जाती है कि वह जटिल से जटिल कार्य को करने में सक्षम हो जाता है।
    - इसके अंतर्गत जटिल कार्य करने की क्षमता व कौशल का विकास जैसे- सृजन करना, बदलना, पता लगाना शामिल हैं।

1.1.6 सुव्यवस्थित ढ़ग से लिखित अधिगम परिणामों का महत्व

शिक्षण योजना में सीखने के परिणाम का संबंध आत्मा और धुरी की तरह होता है इसके निम्नलिखित कारण हैं-

- शिक्षार्थियों के स्तर के अनुसार विशिष्ट सामग्री को पढ़ाने के उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट करता है।
- शिक्षक को उचित दिशा में शिक्षण आरंभ करने में सहायता करता है।
- संज्ञानात्मक स्तर पर आधारित सामग्री की पहचान करने में सहायता करता है।

- शिक्षण रणनीति की योजना बनाने और शिक्षण के लिए उपयुक्त उपकरणों/मीडिया के उपयोग में सहायता करता है।
- नियमित रूप से और सत्र के अंत में क्रमशः रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के रूप में योजना बनाने और मूल्यांकन करने में मदद करता है।

इसलिए उपरोक्त उप-अनुभागों में शिक्षण नियोजन प्रक्रिया की शुरुआत में शिक्षक द्वारा अपेक्षित अनुदेशात्मक उद्देश्यों या सीखने के परिणामों को लिखने के कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। पढ़ने के बाद आप अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यासों से आगे बढ़ सकते हैं।

1.1.7 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच करें

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1. आप स्मरण स्तर के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को अवलोकन रूप में कैसे व्यक्त करेंगे?

.....

.....

प्रश्न 2. समझ स्तर के उद्देश्यों को लिखने के लिए कौन-कौन सी क्रियाओं का उपयोग किया जाता है?

.....

प्रश्न 3. अपने विषय से कोई विषय-वस्तु चुनकर उससे संबंधित कम से कम तीन शिक्षण उद्देश्यों को लिखिए।

.....

.....

.....

1.1.8 चर्चा के बिंदु

- विचार करें कि, शिक्षण योजना की तैयारी के दौरान अनुदेशनात्मक उद्देश्यों तथा सीखने के परिणामों के बारे में लिखने और सोचने के लिए सबसे उपयुक्त समय कब होना चाहिए, और क्यों?

1.2 पाठ- प्रस्तावना का कौशल (प्रकरण प्रारंभ एवं प्रेरणा कौशल)

प्रथम इकाई के इस खंड में पाठ-प्रस्तावना का कौशल (**प्रकरण प्रारंभ एवं प्रेरणा कौशल**) का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। प्रस्तावना कौशल ही शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को सुचारू रूप में शुरू करने के लिए आवश्यक है।

- इस कौशल का संबंध पाठ आरंभ करने की कला से है। शिक्षक पाठ प्रस्तुतीकरण के पूर्व विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने, रूचि जागृत करने, पूर्व ज्ञान का नवीन ज्ञान से संबंध स्थापित करने के लिए, जो भी कक्षा के अंतगर्त क्रिया-कलाप करता है उसे प्रस्तावना कौशल कहते है। यदि पाठ ठीक से प्रारंभ हो तो सुचारू रूप से आगे बढ़ता है और शिक्षक सफल और प्रभावी माना जाता है।
- शिक्षण में प्रस्तावना कौशल का उपयोग करते समय पूर्व अनुभव का उपयोग और पाठ परिचय के मुख्य भागों में निरंतरता बनाए रखना प्रमुख है। शिक्षण में इस कौशल का उपयोग करते समय ध्यान रखने योग्य बात है कि स्थानीय और वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित प्रश्नों, कथनों, टिप्पणियों, तथ्यों, कहानियों और आख्यानों आदि का उपयोग करना चाहिए। ये सभी विद्यार्थी को वास्तविक कक्षा परिस्थिति की ओर आकर्षित करते हैं तथा शिक्षक को प्रेरणा स्थापित करने में मदद करते हैं।

इस कौशल के उद्देश्य इस प्रकार हैं

- विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने और सीखने के लिए उनकी तैयारी करना।
- विद्यार्थियों में प्रेरणा को जागृत करना।
- विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान के लिए तत्पर व प्रेरित करना।
- अधिगम अनुभव को स्पष्ट रूप से इंगित करना।
- शिक्षार्थी के पूर्व अनुभवों तथा ज्ञान की समीक्षा करना और इसे वर्तमान सामग्री/कार्य से जोड़ना।
- शिक्षार्थी, पाठ्य-सामग्री और आस-पास के वातावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित करना।

1.2.1 प्रस्तावना कौशल के घटक

प्रस्तावना कौशल में निम्नलिखित मुख्य घटकों का उपयोग किया जाता है-

- **पूर्व ज्ञान का उपयोग-** शिक्षक को पाठ शुरू करने से पहले विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को जानना आवश्यक है। इस प्रकार नवीन ज्ञान विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान या अनुभव पर आधारित होना चाहिए।
- **निरंतरता बनाये रखना-** शिक्षार्थी की पूर्व जानकारी के आधार ही नवीन जानकारी और ज्ञान में निरंतरता प्रदान की जानी चाहिए।
- **उद्देश्य और सहायक सामग्री-** विशिष्ट सामग्री को पढ़ाने के विधियों और साधनों के संबंध में निर्णय शिक्षक द्वारा शिक्षार्थियों के परिपक्वता स्तर के अनुसार लिया जाना चाहिए। इसका आशय है शिक्षण की सामग्री, उद्देश्य और उपकरण शिक्षार्थी की समझ के स्तर के अनुरूप होनी चाहिए।
- **प्रस्तावना की अवधि**- पाठ परिचय की अवधि विद्यार्थियों में रुचि जागृत करने और उन्हे सीखने में सक्रिय रुप से भाग लेने के लिए प्रेरित करने तक होनी चाहिए।
- **शिक्षक की क्षमता-** योग्य शिक्षक वह है जिसके पास विद्यार्थियों में रुचि और प्रेरणा पैदा करने की शिक्षण क्षमताएँ होती हैं। ऐसा शिक्षक ही संगठित होकर कार्य कर सकता है।

तालिका 1.2.1: प्रस्तावना कौशल के मुख्य घटकों का कक्षा में उपयोग

क्र. सं.	घटक के नाम	इनका उपयोग कैसे करें (विशेषताएँ)
1.	ध्यान आकर्षित करना	• आवाज, हावभाव और आँखों के संपर्क का उपयोग करके। • दृश्य -श्रव्य उपकरणों का प्रयोग। • बातचीत के विभिन्न स्वरूपों का उपयोग करना।
2.	पूर्व ज्ञान का उपयोग	• पूर्व ज्ञान का उपयोग आवश्यक है। • अर्जित ज्ञान को नये ज्ञान के साथ एकीकृत करना।
3.	उपयुक्त उपकरण का उपयोग	• उपयुक्त उपकरणों या तकनीकों का उपयोग करना। • नाट्यकला, मॉडल, दृश्यश्रव्य- साधनों आदि का उपयोग करना। • वास्तविक जीवन से संबंधित तथ्यों, कहानियों और आख्यानों आदि का उपयोग करना।

यह कौशल शिक्षक द्वारा शिक्षार्थियों की रुचि और ध्यान को विकसित करने और बनाए रखने के लिए पूर्व-अनुदेशनात्मक कौशल है, जिसमें निम्न गतिविधियाँ सम्मिलित हैं-

- **प्रकरण प्रारंभ/ सेट इंडक्शन** शिक्षक की गतिविधियों का एक सममुच्य है, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों का ध्यान आकर्षित करना है।
- शिक्षक-विद्यार्थियों दोनों की सहभागिता और ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है।
- शिक्षक द्वारा इस कौशल का उपयोग प्रेरित करने और विषय सम्बन्धी चुनौती प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है, ताकि कक्षा में उपयुक्त सीखने का वातावरण बनाया जा सके।

1.2.2 पाठ प्रस्तावना प्रस्तुत करने के विशेष क्षेत्र

कक्षा में पाठ प्रस्तावना करने के लिए कुछ मुख्य बिंदु निम्नवत हैं-

i. **पाठ का परिचय-** इसमें कक्षा में विविधता की पहचान करके ध्यान आकर्षित करना शामिल है।
ii. **चर्चा सत्र की शुरुआत-** इसका उद्देश्य रुचि उत्पन्न करना है।
iii. **सत्रीय कार्य का परिचय-** इसका लक्ष्य वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना और उन्हें शामिल करना है।

पाठ में प्रेरक समावेशन (सेट इंडक्शन) के अनुपयोग के भाग के रूप में निम्नलिखित बिंदुओ की पहचान की है-

- **पूर्व पाठ-सामग्री का उपयोग / शिक्षार्थी प्रवेश व्यवहार-** पूर्व पाठ के उपयोग के साथ नई सामग्री के लिए शिक्षार्थी को प्रेरित करना।
- **मौन का उपयोग** : शिक्षक कक्षा में रुककर, अवलोकन आदि क्रियाओं के माध्यम से ध्यान आकर्षित करता है।
- **आवाज का उपयोग-** कक्षा परिस्थिति के अनुसार शिक्षक द्वारा अपनी आवाज़ को निम्न स्वर से उच्च स्वर में व्यवस्थित करना।
- **संचालन का उपयोग-** कक्षा में शिक्षक उचित गति संचालन (हाव-भाव और मुद्रा) उपयोग से ध्यान आकर्षित करने में सहायता करता है।
- **प्रश्न-उत्तर का प्रयोग-** वास्तविक प्रश्नों और संबंधित उत्तरों के प्रयोग से शिक्षार्थी की जिज्ञासा और रुचि को बढ़ावा मिलता है तथा आवश्यकतानुसार पृष्ठपोषण (फीडबैक) भी मिलता है।

1.2.3 पाठ-प्रस्तावना कौशल की प्रासंगिकता

पाठ-प्रस्तावना के कुछ मुख्य कार्य निम्नवत सूचीबद्ध किये गए हैं-

i. यह शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करता है।
ii. यह शिक्षार्थी द्वारा सीखी गई जानकारी को बनाए रखने और याद रखने में प्रोत्साहन करने में सहायता करता है।

iii. यह कक्षा के प्रभावी प्रबंधन को बढ़ाता है।

iv. यह शिक्षार्थियों को कक्षा में शिक्षण सामग्री द्वारा सीखने में सक्षम बनाता है।

v. यह शिक्षण सामग्री के उपयोग को अधिक किफायती बनाता है।

इसलिए हम पाते हैं कि, उपरोक्त सभी उप-अनुभागों में शिक्षण योजना प्रक्रिया की शुरुआत में शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में पाठ शुरू करने के कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। पढ़ने के बाद आप अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यासों पर आगे बढ़ सकते हैं।

1.2.4 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच करें

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1. पाठ आरंभ करने के लिए आप शिक्षार्थियों का ध्यान कैसे आकर्षित करेंगे?

.....

.....

प्रश्न 2. पाठ-प्रस्तावना में पूर्व ज्ञान का क्या महत्व है?

.....

.....

प्रश्न 3. अपने विषय का एक पाठ चुनकर पाठ शिक्षण प्रारंभ करने के लिए कम से कम दो उपयुक्त उपकरण सुझाएँ।

.....

.....

.....

1.2.5 चर्चा के बिंदु

- आप अपनी शिक्षण योजना तैयार करते समय किसी पाठ-प्रस्तावना को प्रस्तुत करने का सबसे उपयुक्त (प्रश्न/वर्णन/कहानी आदि) तरीका क्या मानते हैं, और क्यों?
- शिक्षण- योजना की तैयारी के दौरान पाठ का परिचय यथा प्रश्न/कथा/ कहानी आदि लिखते समय क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए।

1.3 पुनर्बलन कौशल (प्रबलन कौशल)

प्रथम इकाई के इस खंड में उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पुनर्बलन कौशल **(प्रबलन कौशल)** के उपयोग करने की व्याख्या सम्मिलित है| नीचे दिए गए बिंदु पुनर्बलन कौशल के अर्थ, प्रकार और उपयोग को दर्शा रहें हैं।

- पुनर्बलन/प्रबलन एक ऐसा कौशल है जिसका उपयोग शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी के सकारात्मक या वांछनीय व्यवहार की आवृत्ति को बढ़ाने या शिक्षार्थी के नकारात्मक या अवांछनीय व्यवहार को कम करने के लिए किया जाता है।
- पुनर्बलन/प्रबलन दो प्रकार के होते हैं- सकारात्मक और नकारात्मक। **सकारात्मक पुनर्बलन** का उपयोग वांछनीय प्रतिक्रिया या व्यवहार को प्रबल बनाने और **नकारात्मक पुनर्बलन** का उपयोग अवांछनीय प्रतिक्रियाओं को समाप्त करने में योगदान देता है।
- पुनर्बलन शब्द मनोविज्ञान से लिया गया है। पुनर्बलन कौशल का उपयोग सुखद अनुभवों को अपनाने और अप्रिय अनुभवों से बचने के लिए किया जाता है।
- ये पुनर्बलन शाब्दिक या अशाब्दिक रूप में होते हैं।

1.3.1 पुनर्बलन कौशल के उद्देश्य

पुनर्बलन कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

- कक्षा का ध्यान आकर्षित करना और बनाए रखना।
- विद्यार्थियों को सकारात्मक व्यवहार के लिए प्रोत्साहित करना।
- विद्यार्थियों को नकारात्मक व्यवहार के लिए हतोत्साहित करना।
- विद्यार्थी के आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाना।

1.3.2 पुनर्बलन कौशल के मुख्य घटक

पुनर्बलन कौशल के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं-

i. **सकारात्मक मौखिक/शाब्दिक पुनर्बलन-** शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने को स्थायी बनाने के लिए स्वीकृत कथनों का उपयोग शाब्दिक रूप में करता है जैसे 'मैं समझता हूं कि आपका क्या मतलब है,' 'आपको स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहिए।' इस तरह, विद्यार्थियों के सुझाव और उत्साह वर्धन भाषा के उपयोग का समर्थन किया जाता है। शिक्षक का मौखिक व्यवहार (कथन) विद्यार्थी की भावनाओं को स्वीकार करता है, विद्यार्थी प्रतिक्रियाओं की आवृत्ति को दोहराता है और विद्यार्थी के विचारों को सारांशित करता है 'अच्छा', 'बहुत अच्छा', 'उत्कृष्ट', 'शानदार', आदि प्रशंसा जैसे शब्दों का उपयोग करता है। 'सही', 'हाँ', 'ठीक', 'जारी रखें', 'आगे बढ़ें', 'शाबाश', आदि जिन्हें सकारात्मक मौखिक पुनर्बलन माना जा सकता है।

ii. **सकारात्मक अशाब्दिक/गैर-मौखिक पुनर्बलन-** कभी-कभी शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग करता है जैसे मुस्कुराना, सिर हिलाना, ध्यान से सुनना, या ब्लैकबोर्ड पर विद्यार्थी द्वारा दिए गए सही उत्तर को लिखना। ये सभी क्रियाएं सकारात्मक अशाब्दिक पुनर्बलन हैं। सुखद भावनाओं को व्यक्त करने वाले शिक्षक के हाव-भाव और विद्यार्थी की प्रतिक्रियाओं जैसे हर्षित हंसी, ताली बजाना, उत्तर देने वाले विद्यार्थी पर नज़र रखना और उन्हें सुनना ये सब सकारात्मक अशाब्दिक पुनर्बलन का संकेत देता है।

iii. **नकारात्मक शाब्दिक/मौखिक पुनर्बलन**- कभी-कभी सीखने को स्थायी बनाने के लिए कुछ उत्तेजनाओं को दूर करना आवश्यक होता है। जैसे: 'गलत', 'ठीक नहीं' या 'मुझे आपके कथन पसंद नहीं हैं' आदि शब्द विद्यार्थी को आलोचना की तरह लग सकते हैं। शिक्षक के कथन जैसे 'नहीं', 'गलत', 'रूको', 'तुम्हें यह भी नहीं पता', 'ऐसा मत करो', 'वह अच्छा नहीं है' आदि निरुत्साहित करने वाले शब्दों का प्रयोग नकारात्मक पुनर्बलन के लिए होता है।

iv. **नकारात्मक अशाब्दिक/गैर-मौखिक पुनर्बलन-** शिक्षक किसी विद्यार्थी के अनुचित व्यवहार या उसके प्रश्नों के गलत उत्तर की अशाब्दिक अभिव्यक्ति को दर्शाने के लिए अपनी अस्वीकृति प्रदर्शित करता है। जैसे- भौहें चढ़ाना, भौहें उठाना, कठोर और अस्वीकृतिपूर्ण घूरना आदि अशाब्दिक नकारात्मक पुनर्बलन हैं।

उपरोक्त चार घटकों में, **पहले दो घटक वांछनीय पुनर्बलन के कौशल** को इंगित करते हैं और **अंतिम दो घटक अवांछनीय पुनर्बलन के कौशल** को इंगित करते हैं, जो विद्यार्थियो के सीखने पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। जहाँ तक संभव हो इनसे बचा जाना चाहिए।

तालिका 1.3.1: पुनर्बलन/प्रबलन कौशल घटकों का कक्षा में उपयोग

क्र सं.	कौशल के घटक	इनका उपयोग कैसे करें
1.	मौखिक शाब्दिक/	**सकारात्मक**: विद्यार्थी के उत्तर की पुनरावृत्ति और उनकी प्रशंसा करना। **नकारात्मक:** विद्यार्थियों को डांटना और सुधार करने का निर्देश देना।
2.	गैरमौखिक अशाब्दिक/	**सकारात्मक :** मुस्कान, सकारात्मक रूप में सिर को हिलाना आदि। **नकारात्मक :** क्रोध, निषेधात्मक रूप में सिर को हिलाना आदि।
3.	संपर्क पुनर्बलन	पीठ थपथपाना, हाथ मिलाना और विद्यार्थियों के सिर पर हाथ रखना।
4.	समीपता पुनर्बलन	विद्यार्थियों के करीब जाना और उन्हें अधिक शामिल करना और सीखने में रुचि रखना।
5.	गतिविधि पुनर्बलन	एक नियत कार्य, परियोजना, गृह कार्य, असाइनमेंट आदि को देना।
6.	टोकन पुनर्बलन	विद्यार्थियों की नोटबुक पर अंक, ग्रेड, अच्छा, उत्कृष्ट आदि लिख देना।
7.	पुनर्बलन का अनुचित उपयोग	यह वह स्थिति है जब शिक्षक अपनी प्रतिक्रिया द्वारा विद्यार्थी को उसकी गुणवत्ता के संबंध में प्रोत्साहित नहीं करता है। वह हर प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए एक ही प्रकार की टिप्पणी का उपयोग करता है।

8.	अस्वीकृत पुनर्बलन	यह वह स्थिति है, जहाँ शिक्षक प्रोत्साहन नहीं देता जबकि **स्थिति प्रोत्साहन की माँग करती है। चूँकि प्रबलन दिया जाना चाहिए था परन्तु नहीं दिया गया अतः शिक्षक हेतु स्वीकृत नहीं है ।**

1.3.3 पुनर्बलन कौशल उपयोग करने का उद्देश्य

इस कौशल का उपयोग करने के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- शिक्षार्थियों का ध्यान बढ़ाना।
- शिक्षार्थियों को प्रेरित करना।
- शिक्षार्थियों के व्यवहार को सुगम बनाना।
- व्यवधान उत्पन्न करने वाले शिक्षार्थियों को नियंत्रित करना और उनका ध्यान आकृष्ट करना।
- शिक्षार्थियों को स्व-प्रबंधन सीखने में सहायता करना।
- विद्यार्थियों को अपने स्वयं के अधिगम का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाना।
- विद्यार्थियों की उपलब्धि और प्रयासों को पहचानना।
- कक्षा अनुशासन में सुधार करना।
- प्रतिभागियों विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाना।
- विद्यार्थियों को दृढ़ निश्चयी बने रहने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे अधिक उपलब्धियां प्राप्त कर सकें।

उपरोक्त उपखण्डों में पुनर्बलन कौशल और उसके बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में इस कौशल का उपयोग कर सकते हैं। आप इसे पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.3.4 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच करें

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1. पुनर्बलन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

प्रश्न 2. पुनर्बलन कौशल प्रयोग करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

.....

.....

प्रश्न 3. आप अपने विद्यार्थी को सकारात्मक अशाब्दिक पुनर्बलन कैसे देंगे?

.....

.....

1.3. 5 चर्चा के बिंदु

- आपके द्वारा अपने विद्यार्थियों को पढ़ाते समय पुनर्बलन/प्रबलन देने के विभिन्न तरीके क्या हो सकते हैं? विचार करके, अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित करने के लिए उनकी जानकारी प्राप्त करें और उन पर शिक्षण के दौरान ध्यान दें।

- उच्च शिक्षा में विद्यार्थी को पुनर्बलन देते समय क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? शिक्षण योजना तैयार करने से पहले अपने साथियों के साथ विस्तार से सोचकर इसके उपयोग का वर्णन करें।

1.4 उद्दीपक परिवर्तन का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में उद्दीपक परिवर्तन कौशल का विस्तार सम्मिलित है। उच्च शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं।

- जो कुछ भी व्यक्ति में प्रतिक्रिया को उत्पन्न करता है वह सब **उद्दीपक** है। विद्यार्थियों का ध्यान पाठ में लगाये रखने के लिए शिक्षक अपने व्यवहारों में जान-बूझकर जो परिवर्तन (शाब्दिक वाचन–अशाब्दिक भाव परिवर्तन, बोर्ड लेखन आदि) लाता है वह सब उद्दीपक का कार्य करता है। कौशलों में इस तरह के समस्त परिवर्तन को उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहते हैं।
- विद्यार्थियों के सीखने के लिए कई स्रोतों से प्रासंगिक जानकारी पर ध्यान देना और समझना आवश्यक होता है। पाठ्यवस्तु पर शिक्षार्थी का ध्यान आकर्षित करने के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न प्रकार की क्रियाओं जैसे- हाथ से इशारे करना, सहायक सामग्री का प्रयोग, हाव-भाव बदलकर अपनी बात कहना, मौखिक या मीडिया सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।
- शिक्षक को अनुदेशात्मक प्रक्रिया के लिए उदार और बहुमाध्यम (मल्टीमीडिया) दृष्टिकोण अपनाकर शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।
- इस प्रकार सामग्री की ओर शिक्षार्थी का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रोत्साहन परिवर्तन की प्रक्रिया हेतु कक्षा में विभिन्न साधनों के प्रयोग को **उद्दीपक परिवर्तन कौशल** कहा जाता है। अंततः शिक्षक को प्रोत्साहन की मात्रा और विविधता (क्या, कब और कितनी) तय करनी होती है। समय-

समय पर आवश्यकतानुसार कक्षा में उद्दीपक परिवर्तन कौशल के विभिन्न घटकों को शिक्षक द्वारा पहचान कर कुशलता पूर्वक उपयुक्त निर्णय लेना होता है।

1.4.1 उद्दीपक परिवर्तन कौशल के घटक

उद्दीपक परिवर्तन कौशल के विभिन्न घटकों के बारे में विवरण आगे के भाग में दिया गया है-

शिक्षक गतिविधि

- शिक्षक को पूरी कक्षा का ध्यान आकर्षित करने और विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर केंद्रित करने के लिए शिक्षक को शिक्षण मंच/प्लेटफार्म पर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर भी आना-जाना चाहिए।
- ये गतिविधि उद्देश्यपूर्ण होने चाहिए। शिक्षक गतिविधि द्वारा विद्यार्थियों का ध्यान विषय और कक्षा में बनाए रखता है, उदाहरण के लिए-आरेख पर चर्चा करने के लिए लेखन बोर्ड की ओर जाना।

विद्यार्थी गतिविधि

- एक विद्यार्थी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है। जिस कार्य में विद्यार्थी संलग्न हैं उसमें शारीरिक भागीदारी का होना विद्यार्थियों की रुचि और ध्यान को केन्द्रित रखती है।
- विद्यार्थियों की शारीरिक भागीदारी विभिन्न रूपों जैसे- उपकरणों को संभालने, नाटक करने और बोर्ड पर लिखने के रूप में हो सकती है।

शिक्षक भाव- मुद्रा

- अशाब्दिक व्यवहारों से जुड़े भावों और संवेगों की अभिव्यक्ति को भाव-मुद्रा कहा जाता है। भाव-मुद्रा में हाथ और सिर की गति, आँखों की गति, चेहरे के भाव आदि शामिल होते हैं।

- भाव-मुद्राओं का उपयोग शिक्षक द्वारा वास्तव में प्रदान किए जाने वाले संदेश के मूल्य को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण शिक्षक व्यवहार है। उपयुक्त भाव- मुद्रा से मौखिक संचार की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

संवेदी/ भाव केंद्रीकरण

- मौखिक कथनों और भावमुद्रा को एक साथ ध्यान केंद्रित करने को संवेदी/भाव केंद्रीकरण कहा जाता है। संवेदी/भाव केंद्रीकरण विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करता है।
- उदाहरण के रुप में सिर हिलाकर उत्कृष्ट कहना संवेदी/भाव केंद्रीकरण से संबंधित हैं।

आवाज में उतार- चढ़ाव

- शिक्षक द्वारा एक समान स्तर की बातचीत (पिच,टोन) और भाषण का लगातार उपयोग उनके संचार को सुस्त, निष्क्रिय बना देता है और इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- इसलिए, शिक्षकों को बातचीत के स्वर और गति के अनुरूप अपने आवाज के उतार-चढ़ाव को व्यवस्थित करना चाहिए। यह सब कौशल घटक कक्षा-संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अंत:क्रिया के प्रारूप में परिवर्तन

- शिक्षण का संवादात्मक कार्य एक पहल या उत्तरदायी अधिनियम के रूप में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच लगातार संवाद करता है।
- अंतःक्रिया मोटे तौर पर दो प्रकार की होती है: मौखिक और अशाब्दिक। यह अंतःक्रिया संचार के अलावा और कुछ नहीं है।
- शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच अंतःक्रिया के मुख्य प्रतिमान के रूप में विशेष महत्त्व के पक्ष हैं- शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया, शिक्षक-समूह अंतःक्रिया, विद्यार्थी-विद्यार्थी अंतःक्रिया एवं 'शिक्षक-संपूर्ण कक्षा' अंतःक्रिया। इनका कुशलता पूर्वक उपयोग कक्षा को प्रभावी बनता है।

रुकना

- कुछ सेकंड के लिए रुकना **मौन** है। मौन का प्रयोग बातचीत के दौरान विराम का संकेत देता है। जानकारी देते समय, व्याख्यान देते हुए, समझाते हुए, मौन के छोटे जानबूझकर दिये गए अंतराल का उपयोग करना कक्षा को प्रभावी बनाता है।
- मौन का अपना अर्थ होता है और यदि इसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है, तो यह विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने और बनाए रखने में भी मदद करता है।
- मौन के इस उद्देश्य पूर्ति के लिए 3-4 सेकंड की अवधि का विराम उचित माना जाता है।

दृश्य-श्रव्य रूपांतरण (ऑडियो-विजुअल स्विचिंग)

- दृश्य माध्यम के रूप में एक चार्ट, चित्र, ग्राफ, मानचित्र और मॉडल या ब्लैकबोर्ड पर चित्र, आंकड़े और ग्राफ़ बनाने के रूप में हो सकता है।
- केवल श्रव्य माध्यम या केवल दृश्य माध्यम ही कक्षा में अरूचि पैदा करते हैं।
- एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करते समय श्रव्य या दृश्य माध्यमों का उपयोग करना चाहिए।

तालिका 1.4.1: उद्दीपक परिवर्तन कौशल के घटकों का कक्षा में उपयोग

क्रम सं.	कौशल घटक के नाम	मुख्य विशेषताएँ
1.	शिक्षक गतिविधि	शिक्षक स्थिर नहीं होना चाहिए, उसे व्याख्यान तालिका के चारों ओर घूमना चाहिए ताकि वह और छात्र सक्रिय रहें।

2.	शिक्षक भाव-मुद्रा	शिक्षक की शारीरिक भाषा और चेहरे की अभिव्यक्ति आकर्षक, अवधारणाओं को समझाने और शिक्षण को एक जीवंत अनुभव बनाने के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए। इसे समय-समय पर और आवश्यकता के अनुसार बदला जाना चाहिए।
3.	अंत:क्रिया की शैली में परिवर्तन	कक्षा में बातचीत के पैटर्न को लगातार बदलना चाहिए। चार प्रकार के अंत:क्रिया/इंटरैक्शन पैटर्न हो सकते हैं: I. पूरी कक्षा के लिए शिक्षक II. विद्यार्थियो के समूह के लिए शिक्षक III. व्यक्तिगत विद्यार्थी के लिए शिक्षक IV. विद्यार्थी से विद्यार्थी
4.	भाषण शैली में परिवर्तन/ आवाज में परिवर्तन	शिक्षक को अवधारणा की प्रासंगिकता के आधार पर और कक्षा की नीरसता को दूर करने के लिए अपने भाषण पैटर्न में बदलाव करना चाहिए। यह विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने, बनाए रखने और व्यक्त की जा रही अवधारणा के महत्व को दर्शाने में भी मदद करता है। इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित तीन भाषण पैटर्न का उपयोग किया जा सकता है: I. विराम II. मंद स्वर III. उच्च स्वर

5.	मौखिक- दृश्य परिवर्तन	विषय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षार्थियों के भाव केंद्रीकरण माध्यम को बदलना आवश्यक हो जाता है। इसे निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है: I. मौखिक से दृश्य II. दृश्य-मौखिक से मौखिक III. दृश्य से मौखिक IV. दृश्य से मौखिक-दृश्य
6.	विद्यार्थी गतिविधि	शिक्षार्थियों को गतिविधि आधारित शिक्षा योजना में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी सक्रिय रुप से गतिविधि में भाग ले सके।
7.	ध्यान केंद्रित / संवेदी केंद्रीकरण	ध्यान केन्द्रित करने का तात्पर्य शिक्षार्थियों का ध्यान उस विशेष बिंदु की ओर आकर्षित करना है जिस पर शिक्षक जोर देना चाहता है। इस तरह की तकनीक में मौखिक ध्यान केंद्रण, भाव-मुद्रा केंद्रण, या मौखिक-भाव केन्द्रण सम्मिलित है।

1.4.2 उद्दीपन परिवर्तन कौशल के व्यवहार प्रतिमान

कुछ शिक्षाविदों ने छ: सरल व्यवहार प्रतिमानों की पहचान की जिनका उपयोग शिक्षार्थियों के लिए उद्दीपन भिन्नता हेतु किया जा सकता है। इन्हें बाद में "प्रोत्साहन भिन्नता कौशल" का नाम भी दिया गया। ये हैं: संकेतों का उपयोग, ध्यान केंद्रित करना, बातचीत की परिवर्तित शैली, विराम का उपयोग करना, संवेदी माध्यमों को स्थानांतरित करना, एवं शिक्षक की गतिविधि। इन प्रतिमानों पर नीचे के भागों में संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

(1) संकेतो का उपयोग

ये वे क्रियाएँ हैं जो शिक्षक अपनी पाठ प्रस्तुति के दौरान शिक्षार्थियों का ध्यान आकर्षित करने और यहाँ तक कि उनकी रुचि को जागृत करने और बनाए रखने के लिए उपयोग करता है।

- इसके अलावा, इशारों के उपयोग में, शिक्षार्थियों को अपनी बातों को स्पष्ट रूप से समझाने आदि में शरीर के सभी गतिविधियों जैसे सिर, हाथ, पैर और पूरे शरीर की प्रणाली सम्मिलित होती है।
- इस तरह की क्रियाओं का उपयोग पूरे पाठ में शिक्षार्थियों के ध्यान और रुचि को रोकने, और बनाए रखने के लिए किया जाता है।
- इस बीच, शिक्षार्थियों की असावधानी को दूर करने और रोकने के लिए भी कुछ क्रियाएं अपनाई जा सकती हैं, जैसे- आँखों का हिलना (बग़ल में, आगे और पीछे), लेखन बोर्ड या टेबल या डेस्क पर दस्तक, सिर को सीधा या नीचे और बगल में झुकाना। चेहरे के हाव-भाव में बदलाव, जैसे कि- गंभीर रूप, गहरी सोच वाली नज़र, कठोर दृष्टि और आकर्षक मुस्कान आदि।

(2) ध्यान केंद्रित करना

- यह एक ध्यान आकर्षित करने और ध्यान केंद्रित करने की रणनीति है। यह दो प्रकार से नियोजित किया जा सकता है- (अ) मौखिक कथन (ब) हाव-भाव सह मौखिक कथन।

(3) परिवर्तित अंतःक्रिया शैलियाँ

अनुदेशात्मक प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा निम्नलिखित चार बुनियादी अंतःक्रिया शैलियों को अपनाया जा सकता है-

i. **शिक्षक-विद्यार्थी समूह (सम्पूर्ण कक्षा) केन्द्रित-** यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें शिक्षक अपनी कक्षा में विशेष रूप से शिक्षण/सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्रों या छात्राओं के एक समूह को संबोधित करता है।

ii. **शिक्षक-विद्यार्थी केन्द्रित-** यह अंतःक्रिया तब होती है जब शिक्षक किसी विशेष छात्र या छात्रा पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान केंद्रित कर रहा होता है। यह शैली शिक्षक को शिक्षार्थियों के प्रति सहानुभूति दिखाने की भी अनुमति देती है जिससे शिक्षार्थियों के साथ व्यक्तिगत रूप से एक अच्छा तालमेल बनाया जा सके।

iii. **विद्यार्थी-विद्यार्थी केन्द्रित-** यह बातचीत तब होती है जब एक विद्यार्थी अन्य विद्यार्थी द्वारा उठाए गए किसी मुद्दे पर शिक्षक की मध्यस्तता के अंतर्गत प्रतिक्रिया दे रहा होता है। यह शिक्षार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने और ध्यान केंद्रित करने हेतु किया जाता है।

iv. **विद्यार्थी-विद्यार्थी समूह (सम्पूर्ण कक्षा) केन्द्रित-** यह स्थिति तब होती है जब शिक्षक एक विशेष छात्र/छात्रा को नेतृत्व की भूमिका की स्थिति में रखता है एवं इसमें शिक्षक उससे अनुदेशात्मक प्रक्रिया को संभालने की अपेक्षा करता है।

(4) विराम

यह अनुदेशात्मक प्रक्रिया के दौरान, शिक्षार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक शिक्षक अपनी वाणी को कुछ क्षण मात्र के लिए अचानक रोक (विराम) लेता है। हालाँकि, इसके द्वारा वह बहुत ही अल्प काल के लिए मौन रहकर सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है|

(5) संवेदी माध्यमों द्वारा स्थानांतरित करना

शिक्षण/सीखने की प्रक्रिया के दौरान, यह सलाह दी जाती है कि सभी पाँच संवेदी अंगों या तौर-तरीकों का उपयोग करें, जैसे- दृश्य, श्रवण, घ्राण, स्पर्श

और स्वाद। जहां तक संभव हो, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान एक संवेदी तौर-तरीके से स्थानांतरण या दो या दो से अधिक के संयोजन को अपनाया जाना चाहिए।

(6)शिक्षक गतिविधि

शिक्षक द्वारा अनुदेशात्मक प्रक्रिया के दौरान निम्नलिखित संभावित गतिविधियों को नियोजित किया जा सकता है-

- कक्षा में शिक्षार्थियों के बीच घूमें।
- शिक्षार्थियों के बीच कक्षा के बाएँ और दाएँ जाएँ।
- शिक्षार्थियों के बीच कक्षा में आगे और पीछे जाएँ।

1.4.3 उद्दीपक परिवर्तन के कौशल की प्रासंगिकता/उद्देश्य

उत्तेजना परिवर्तन का कौशल एक शिक्षक के लिए बहुत उपयोगी है। कौशल की प्रासंगिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कौशल द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। इससे मदद मिलती है-

i. कक्षा की एकरसता को विराम देना,
ii. प्रदर्शन में विविधता लाना,
iii. विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करना और बनाए रखना,
iv. शिक्षण को आकर्षक एवं रुचिकर बनाना,
v. विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करके शिक्षण को प्रभावी बनाना, एवं
vi. विद्यार्थियों को शिक्षण/सीखने की प्रक्रिया में सम्मिलित करना।

उपरोक्त उपखण्डों में उद्दीपक परिवर्तन कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.4.4 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट: निम्नलिखित प्रश्नों का उतर दीजिये। ऊपर दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर देख भी सकते हैं।

प्रश्न 1 : कक्षा में विभिन्न प्रकार के अंतः क्रिया स्वरुप क्या हैं ?

.....

.....

प्रश्न 2 : भाषण स्वरुप में परिवर्तन करने का कौशल मूलतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करता है?

.....

.....

प्रश्न 3 : अपने विषय से सम्बंधित मौखिक दृश्य परिवर्तन घटक के कम से कम दो उदाहरण दीजिए-

.....

1.4.5 चर्चा के बिंदु:

- आपके पिछले शिक्षण अनुभव के दौरान (यदि कोई हो तो), आपने किस प्रकार की उद्दीपक परिवर्तन शैली को अपने स्तर पर उपयोग किया था? इससे सम्बंधित अनुभाग की दी गई पठन सामग्री को याद करें और उसके साथ सहसंबंध स्थापित करें।

- शिक्षण के दौरान उद्दीपक परिवर्तन के विभिन्न तरीके क्या हो सकते हैं? सोचे, अन्वेषण करे और अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित करने के लिए उन पर ध्यान दें।

1.5 व्याख्या का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में 'व्याख्या' कौशल शब्द का विस्तार सम्मिलित है। उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने के मुख्य बिंदु नीचे दिये गए हैं।

- यह कौशल विद्यार्थियों में समझ और उच्च स्तर की सोच विकसित करने के लिए आवश्यक कौशल है।
- यह कौशल एक शिक्षक के उन महत्वपूर्ण गुणों में से है, जो एक अच्छे शिक्षक के पास होना हीं चाहिए।
- व्याख्या द्वारा किसी अवधारणा, घटना, सामान्यीकरण, प्रक्रिया, कार्य और कारण के बारे में परस्पर संबंधित कथनों के उपयोग के रूप में सुगमता से समझाकर परिभाषित किया जा सकता है।
- यह विद्यार्थियों में समझ बढ़ाने के लिए किसी घटना, विचार, सिद्धांत आदि से संबंधित शिक्षक द्वारा दिए गए परस्पर संबंधित कथनों का एक समूह है।
- एक शिक्षक कई अवधारणाओं, सामान्यीकरणों और प्रक्रियाओं के माध्यम से पढ़ाता है, तथा इसके द्वारा वह विद्यार्थियों को समझाने के लिए उनके पूर्व ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान को संदर्भित करता है।
- व्याख्या की गुणवत्ता शिक्षक की तैयारी और विद्यार्थियों की समझ के स्तर पर निर्भर करता है। कक्षा-कक्ष शिक्षण में अवधारणाओं की व्याख्या करना बहुत महत्वपूर्ण है।

एक शिक्षक व्याख्या कौशल द्वारा विद्यार्थियों को कई विचारों, अवधारणाओं या सिद्धांतों को सुगमता से समझा सकता है।

1.5.1 व्याख्या कौशल के उद्देश्य

मुख्य रुप से इस कौशल के उपयोग करने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

i. विद्यार्थियों को किसी मुद्दे को स्पष्ट करना।
ii. विद्यार्थियों को प्रक्रिया, संरचना और प्रक्रियाओं का वर्णन करना।
iii. विद्यार्थियों को घटनाओं और परिघटनाओं के कारण को बताना।

1.5.2 व्याख्या कौशल के घटक

व्याख्या कौशल के निम्नलिखित घटक हैं-

1) संज्ञानात्मक रूप से जोड़ना,
2) दृष्टांतों का उपयोग करना,
3) तुलना करना और विभेद करना, एवं
4) अर्थपूर्ण पुनरावृत्ति करना I

ऊपर दिये गये विभिन्न घटकों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है।

1. संज्ञानात्मक रूप से जोड़ना

- एक शिक्षक पुरानी (पहले से ज्ञात) अवधारणा और नई अवधारणा के बीच एक कड़ी स्थापित करने के लिए "ज्ञात से अज्ञात", "ठोस से अमूर्त", "आसान से कठिन" और "सरल से जटिल" के सिद्धांतों का उपयोग करके एक नई अवधारणा प्रस्तुत करता है।
- इस नई अवधारणा को, उसमे निहित उप-अवधारणाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से ही प्रस्तुत और विकसित किया जा सकता है। अतः सभी उप-

अवधारणाओं को भी एक दूसरे के साथ तार्किक रूप से जोड़ा जाना चाहिए। यही संज्ञानात्मक जुड़ाव है।

2. दृष्टांतों का उपयोग

- एक नई अवधारणा को गैर-उदाहरण प्रदान करने वाली विभिन्न स्थितियों या जीवन-अनुभवों के संदर्भ में पर्याप्त रूप से चित्रित किया जाना है। दृष्टांतों को अमूर्त अवधारणाओं को समझने के उद्देश्य को पूरा करना चाहिए।

3. तुलना और विभेद

- विभिन्न अवधारणाओं को पढ़ाते समय, किसी को यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमें से कुछ आपस में घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। उनमें कुछ समानताएँ और असमानताएँ हो सकती हैं। विद्यार्थियों को उनके बीच भेदभाव करने में कठिनाई हो सकती है। यह घटक दो संबंधित लेकिन भिन्न अवधारणाओं के बीच भेदभाव करने के उद्देश्य से भी कार्य करता है।

4. अर्थपूर्ण पुनरावृत्ति

- एक अवधारणा, एक शब्द या एक परिभाषा के संक्षिप्त विवरण को नियमित अंतराल पर पुनरावृत्ति करने से वह शिक्षार्थियों के मन में स्थिर हो जाता है। एक अर्थपूर्ण पुनरावृत्ति सोद्देश्य, जानबूझकर की गई, सार्थक और प्रासंगिक होनी चाहिए।

तालिका 1.5.1: व्याख्या कौशल के घटकों का कक्षा में उपयोग

क्र.सं.	कौशल घटक के नाम	मुख्य विशेषताएँ
1.	वक्तव्य प्रारम्भ का उपयोग	किसी भी व्याख्या को शुरू करने से पहले, शिक्षक को विद्यार्थियों को स्पष्ट कथन के माध्यम से उस दिन क्या पढ़ाना है, इसके बारे में जागरूक करना चाहिए।

2.	व्याख्या सम्पर्क का उपयोग	इस तकनीक का उपयोग मुख्य रूप से सम्पर्क के साथ कथनों के रूप में व्याख्या करने के लिए किया जाता है जैसे- 'तो', 'इसलिए', 'क्योंकि', 'के कारण', 'परिणाम के रूप में', 'के क्रम में' आदि।
3.	मध्यस्थों का उपयोग	यह सीखने की प्रक्रिया को मजबूत बनाने में सहायता करता है।
4.	समापन कथन का उपयोग	यह कथन व्याख्या के अंत में दिया जाता है। इसमें व्याख्या के सभी मुख्य परिणामों का सारांश शामिल होता है।
5.	विद्यार्थियों की समझ को परखने के लिए प्रश्न	व्याख्या के बाद अवधारणा की समझ का परीक्षण करने के लिए विद्यार्थियों से छोटे प्रश्न पूछे जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य केवल यह आंकना है कि विद्यार्थियों ने समझा है या नहीं।

1.5.3 व्याख्या कौशल की प्रासंगिकता/उद्देश्य

यह कौशल एक अच्छे शिक्षक के उन सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से है जो उसके पास होना चाहिए, क्योंकि यह निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करता है :

i. यह कौशल शिक्षक को सामग्री के स्तर को सहसंबंधित करने, और उसे कक्षा में शिक्षार्थियों के स्तर के अनुसार संवाद करने के लिए विभिन्न प्रकार से उपयोग करने, में सक्षम बनाता है।

ii. शिक्षार्थियों के बीच अवधारणाओं आदि की उचित समझ विकसित करने के लिए भी इस कौशल की आवश्यकता होती है।

iii. यह कौशल शिक्षक को शिक्षार्थियों में उच्च स्तरीय सोच विकसित करने में भी सहयोग प्रदान करता है।

उपरोक्त उपखण्डों में व्याख्या कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना क्रियान्वन के दौरान शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग किया जा सकता है। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.5.4 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये। मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर देख सकते हैं।

प्रश्न 1 : अपने विषय के किसी भी शीर्षक के लिए आरंभिक वक्तव्य लिखें?

.....

.....

प्रश्न 2 : आप अपने विषय के साथ व्याख्या कौशल को जोड़कर कम से कम दो कथन लिखें।

.....

.....

प्रश्न 3 : व्याख्या कौशल में उदहारण की क्या भूमिका है ?

.....

.....

1.5.5 चर्चा के बिंदु

- एक कक्षा में विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थी होते हैं। आप सोचें और चर्चा करें कि यदि विविध क्षमताओं वाले व्यक्तियों की अवधारणाओं को विकसित करने में किस प्रकार के व्याख्या की आवश्यकता होती है।

- विभिन्न घटकों के उपयोग द्वारा अवधारणाओं को समझाने के विभिन्न तरीकों के बारे में सोचें, एवं उपरोक्त उप-अनुभागों में कौशल और उन्हें चिन्हित करें। समुचित विचार करके उन्हें अपनी शिक्षण योजना में शामिल करें।

1.6 प्रश्न पूछने का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में 'प्रश्न पूछने' के कौशल शब्द का विस्तार शामिल है उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं।

हम सभी जानते हैं कि जिज्ञासा ही शिक्षा और ज्ञान विकास का आधार है। जो कि विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के निर्माण की ओर ले जाता है। इस प्रकार प्रश्न सोचने, तर्क करने, सीखने और सिखाने का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण हैं। शिक्षण के प्रत्येक चरण (अर्थात पूर्व-क्रियात्मक, अंत:क्रियात्मक और पश्च-क्रियात्मक चरण) में प्रश्नों का उपयोग किया जाता है।

1.6.1 प्रश्न पूछने के उद्देश्य और दृष्टिकोण

शिक्षण में प्रश्नों के प्रयोग का उद्देश्य निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करता है :

- पूर्व ज्ञान का पता लगाना
- विषय को संशोधित करना
- उद्दीपक विचार प्रक्रिया
- उत्साहवर्धक चर्चा
- विद्यार्थियों की सहभागिता प्राप्त करना

प्रश्न पूछने के दृष्टिकोण

- **नियोजित प्रश्न-** कक्षा में सभी शिक्षार्थियों से बारी-बारी से प्रश्न पूछा जाता है।
- **वितरण** - एक ही समय में सभी से प्रश्न पूछा जाता है।
- **उत्तरों को स्वीकार करना-** पिछले प्रश्न के उत्तर को स्वीकार करने और सकारात्मक प्रतिक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए प्रश्न पूछा जाता है।

1.6.2 प्रश्न के स्तर या क्रम आधारित प्रकार

प्रश्नों की जटिलता के आधार पर प्रश्नों के तीन स्तर होते हैं-

i. **निम्न स्तरीय (निचले क्रम के) प्रश्न**- यह संज्ञानात्मक स्तरीय पूछताछ (रटी हुई यादें और स्मरण) से संबंधित होते हैं। यह मात्र तथ्यात्मक/सूचनात्मक प्रकृति को बढ़ावा देते हैं।

ii. **मध्य स्तरीय (मध्य क्रम के) प्रश्न**- यह व्यापक समझ से संबंधित होते हैं। इनसे उच्च कोटि की सोच को बढ़ावा मिलता है।

iii. **उच्चस्तरीय (उच्च क्रम के) प्रश्न**- यह अनुप्रयोग (दैनिक जीवन में उपयोग) से संबंधित होते हैं। इनसे उच्च कोटि की सोच को बढ़ावा मिलता है।

विद्यार्थी की योग्यता, सामग्री की प्रकृति, प्रश्न पूछने के उद्देश्य और शिक्षण के स्तर के आधार पर शिक्षक इनमें से किसी भी स्तर के प्रश्नों का उपयोग कर सकता है।

प्रश्नों के अन्य प्रकार

i. **मुक्त प्रश्न-** इन प्रश्ननों का कोई निश्चित/ मात्र एक उत्तर नहीं होता है।

ii. **बंद प्रश्न-** इन प्रश्ननों का एक ही सही उत्तर होता है।

iii. **आलंकारिक/नाटकीय प्रश्न**- ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका कोई आसान/सामान्य उत्तर नहीं होता है। ये उच्च क्रम सोच वाले प्रश्न होते हैं।

1.6.3 अच्छे प्रश्न के गुण

एक अच्छे प्रश्न में तीन गुण सम्मिलित होते हैं- संरचना, प्रक्रिया और उत्पाद। ये तीनों गुण प्रश्न तैयार करने और पूछने की प्रक्रिया में अति महत्वपूर्ण होते हैं। इनकी विशिष्ट विशेषताएं नीचे तालिका में दी गई हैं।

तालिका 1.6.1: अच्छे प्रश्न के कौशल घटकों की विशेषताएँ

क्र.सं.	अच्छे प्रश्न के कौशल घटक	मुख्य विशेषताएँ
1.	संरचना	• व्याकरणिक शुद्धता और स्पष्टता • संक्षिप्तता • प्रासंगिकता • विशिष्टता
2.	प्रक्रिया	• गति • रोकना • शैली
3.	उत्पाद	• प्रतिक्रिया • जानकारी • ज्ञान

1.6.4 प्रश्न पूछने के कौशल के मुख्य घटक

प्रश्न पूछने के कौशल के निम्नलिखित मुख्य घटक हैं-

- **प्रश्नों की गुणवत्ता-** प्रश्न आवश्यक उद्देश्य की पूर्ति तभी कर सकते हैं, जब उन्हें शिक्षक द्वारा देखभाल के साथ तैयार किया गया हो। इसलिए प्रश्न पूछते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए:
    I. **प्रासंगिकता-** पूछे जाने वाले प्रश्न पढ़ाए जा रहे विषय से संबंधित होने चाहिए। अप्रासंगिक प्रश्न छात्रों को भ्रमित कर सकते हैं और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बाधा डाल सकते हैं।

II. **स्पष्टता-** प्रश्नों को सरल और स्पष्ट भाषा में पूछा जाना चाहिए।

III. **विशिष्टता-** पूछे गए प्रश्न सीधे और सटीक होने चाहिए।

IV. **व्याकरणीय शुद्धता-** तैयार किए गए प्रश्न व्याकरण की दृष्टि से सही होने चाहिए, अन्यथा विद्यार्थी उन्हें समझ नहीं पाएंगे।

- **कक्षा में प्रश्न प्रस्तुत करना-** एक शिक्षक को स्पष्ट और सुने जाने योग्य आवाज, उच्चारण, स्वर और स्वर में उचित उतार-चढ़ाव के साथ प्रश्न पूछने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, प्रश्न पूछने की गति बहुत तेज या बहुत धीमी नहीं होनी चाहिए, और विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।
- **सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित करना-** प्रश्नों को एक ही विद्यार्थी के बजाय एक कक्षा में सभी विद्यार्थियों को संबोधित करना चाहिए। एक शिक्षक को सवालों के जवाब देने के लिए सभी छात्रों को शामिल करना चाहिए ताकि वे सभी कक्षा के दौरान सजग और सतर्क रहें।
- **शिक्षक का व्यवहार-** प्रश्न पूछते समय शिक्षक का व्यवहार स्वाभाविक होना चाहिए। वाणी और प्रश्न पूछने की शैली में धैर्य और मधुरता होनी चाहिए।
- **प्रोत्साहन देना-** जब कोई विद्यार्थी किसी प्रश्न का उत्तर देने में अपनी असमर्थतता व्यक्त करता है, तो शिक्षक उसे पढ़ाये गए अंश को याद दिलाने से सम्बंधित कुछ संकेत दे सकता है।

इस प्रकार, प्रश्न पूछने की उचित कला के साथ-साथ उचित व्यवहार और प्रस्तुति शिक्षकों को उनके कक्षा-कक्ष शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में मदद कर सकती है।

1.6.5 खोजपूर्ण प्रश्न कौशल के घटक और उपयोग

खोजपूर्ण प्रश्न वे होते हैं जो विद्यार्थियों को समस्या के विभिन्न पहलुओं के बारे में गहराई से सोचने में मदद करते हैं। इस तरह के प्रश्न को दोबारा पूछकर शिक्षक विद्यार्थियों को अधिक विचारशील बनाता है। वह विद्यार्थियों को विषय की गहराई में उतारकर उन्हें समझने में सक्षम बनाता है।

तालिका 1.6.2: खोजपूर्ण प्रश्न कौशल के मुख्य घटक

क्र.सं.	कौशल घटक के नाम	मुख्य विशेषताएँ
1.	संकेत देना	जब कोई विद्यार्थी कक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर देने में अपनी असमर्थता व्यक्त करता है या उसका उत्तर अधूरा होता है, तो शिक्षक ऐसे प्रश्न पूछ सकता है जो विद्यार्थियों को पहले से पूछे गए प्रश्नों को हल करने के लिए प्रेरित करे।
2.	विस्तृत सूचना प्राप्ति	जब विद्यार्थी कक्षा में सही उत्तर देते हैं लेकिन शिक्षक शिक्षार्थी से अधिक जानकारी और स्पष्टीकरण चाहता है तो आगे उत्तर के सही भाग में 'कैसे' और 'क्यों' डालकर सम्बंधित विस्तृत सूचना प्राप्त कर सकता हैं।
3.	पुन:केन्द्रीयकरण	जब शिक्षक वही प्रश्न अन्य विद्यार्थियों से तुलना के लिए पूछे तो इसे पुन केंद्रीकरण: के रूप में जाना जाता है।
4.	पुन: निर्देशन प्रश्न	जिन प्रश्नों द्वारा एक से अधिक शिक्षार्थियों को उत्तर देने के लिए निर्देशित किया जाता है, वे पुन: निर्देशित प्रश्न कहलाते हैं।

5.	आलोचनात्मक सजगता बढ़ाना	इस तकनीक का उपयोग तब किया जाता है जब विद्यार्थी की प्रतिक्रिया सही होती है। विद्यार्थी जो कुछ जानता है, उससे परे सोचने के लिए एवं प्रेरित करने के लिए शिक्षक उच्च क्रम के प्रश्न पूछता है। इसमें चर्चा के बिंदु पर 'कैसे' और 'क्यों' और कभी-कभी 'क्या' प्रकार के प्रश्न सम्मिलित होते हैं।

जब शिक्षक कक्षा में कोई प्रश्न रखता है, तो उसे विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। खोजपूर्ण प्रश्न करने के कौशल में आवश्यक प्रतिक्रिया प्राप्त करने की दृष्टि से चरण-दर-चरण खोजपूर्ण प्रश्न के माध्यम से विद्यार्थी-प्रतिक्रियाओं में गहराई से जानना सम्मिलित है। प्रत्येक प्रश्न के बाद विद्यार्थियों की कई तरह की प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जैसे- कोई प्रतिक्रिया नहीं, गलत प्रतिक्रिया, आंशिक रूप से सही प्रतिक्रिया, अधूरी प्रतिक्रिया और सही प्रतिक्रिया। आइए एक-एक करके इन पाँच प्रतिक्रिया स्थितियों पर विचार करें।

i. **कोई प्रतिक्रिया स्थिति नहीं-** यह स्थिति विद्यार्थी को प्रश्न समझने में असमर्थता, संरचित प्रतिक्रिया के लिए, या उद्देश्य के लिए आवश्यक/ अपेक्षित तथ्यों की कमी के कारण या उत्तर देने या संबंधित तथ्यों को याद करने में विफलता के कारण हो सकती है।

ii. **गलत प्रतिक्रिया की स्थिति-** किसी प्रश्न का गलत उत्तर विद्यार्थी की ओर से तथ्यों, अवधारणाओं और सामान्यीकरणों के ज्ञान की कमी को इंगित करता है।

iii. **आंशिक रूप से सही प्रतिक्रिया स्थिति-** वे विद्यार्थियों की ओर से तथ्यों, अवधारणाओं और सामान्यीकरण के आंशिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

iv. **अपूर्ण प्रतिक्रिया की स्थिति-** कभी-कभी जब एक अधूरी प्रतिक्रिया की स्थिति होती है, तो हम अनुमान लगाते हैं कि या तो विद्यार्थी की स्मृति में आवश्यक तथ्य, अवधारणाएं या सामान्यीकरण नहीं है या यह प्रश्न को समझने और प्रतिक्रिया की संरचना करने में उसकी अक्षमता के कारण भी हो सकता है।

v. **सही प्रतिक्रिया की स्थिति-** सही प्रतिक्रिया की स्थिति विद्यार्थी द्वारा व्यक्त किए गए कथनों को संदर्भित करती है।

खोज पूर्ण प्रश्नों के द्वारा शिक्षक जो कार्य सुगमता से कर सकता है उनमें सम्मिलित व्यवहार हैं- अधिक जानकारी प्राप्त करना, पुनर्निर्देशन करना, पुनः ध्यान केंद्रित करना और किसी की आलोचनात्मक जागरूकता को बढ़ाना आदि।

1.6.6 खोजपूर्ण प्रश्न और प्रश्न पूछने के कौशल का उद्देश्य

- ऐसा माना जाता है कि कक्षा में शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू प्रश्न पूछने की प्रक्रिया है। परिणामस्वरूप, विद्यार्थी आत्मनिरीक्षण और विषय को गहराई से समझने की क्षमता भी सीखते हैं।
- प्रश्नों का उपयोग विषयों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए भी किया जाता है। यह शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी की सतर्कता और भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान, विषय प्रवेश, शैली और दिए गए विषय के प्रति रुचि और दृष्टिकोण के बारे में सीखने में शिक्षक की सहायता करते हैं। किसी भी विषय के शिक्षक का अपने विद्यार्थियों के साथ प्रभावी ढंग से अच्छे प्रश्न पूछने की क्षमता उनकी संवाद करने की क्षमता में सुधार कर सकती है।

- प्रश्न पूछने का कौशल शिक्षार्थी को विभिन्न पहलुओं पर गंभीर रूप से सोचने में सक्षम बनाता है जैसे– चर्चा पर आधारित सामग्री के बारे में क्या, कैसे, क्यों, कब, कहाँ आदि के बारे में सोचना।

उपरोक्त उपखण्डों में प्रश्न पूछने और खोजपूर्ण प्रश्न करने के कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ कीजाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.6.7 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1. अधूरी प्रतिक्रिया की स्थिति को संभालने के लिए किस तकनीक का उपयोग किया जाता है?

.....

.....

प्रश्न 2. आलोचनात्मक जागरूकता में किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं ?

.....

.....

प्रश्न 3.अपने विषय के किसी भी विषय पर कम से कम दो मुक्त शैली के प्रश्न लिखें।

.....

.....

1.6.8 चर्चा के बिंदु

- बिना किसी प्रश्न वाली कक्षा-कक्ष परिस्थिति की कल्पना करें और उसकी प्रासंगिकता और कठिनाइयों के बारे में सोचें। तदोपरांत समाधान पर विचार करें।
- उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों से प्रश्न करते समय क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? कक्षाओं में इनका उपयोग करने से पहले अपने साथियों के साथ इस पर विस्तृत रूप से विचार करें।

1.7 प्रदर्शन का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में 'प्रदर्शन कौशल' शब्द का विस्तार सम्मिलित है। उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं।

प्रदर्शन का तात्पर्य दिखाने से है। प्रदर्शनों में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं को एक प्रदर्शन मेज पर रख कर दिखाया जाता है। मेंज को आम तौर पर एक ऊंचे स्थान (प्लेटफार्म) पर रखा जाता है ताकि सभी लोग करीब से प्रदर्शन को देख सकें। यह शिक्षण की एक ऐसी गतिविधि या प्रक्रिया है, जिसमें सीखने की प्रक्रिया से संबंधित अवधारणा, विचार, शिक्षण बिंदु आदि की व्याख्या और वर्णन करने के लिए प्रतिरूप अथवा प्रयोग आदि सम्मिलित किये जाते हैं। प्रदर्शन अथवा दिखाकर शिक्षण करने की प्रक्रिया वास्तविक जीवन की स्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए विषय वस्तु को मूर्त रूप प्रदान करने के साथ हीं उसे सुगमता से ग्रहणीय बनाती है।

1.7.1 प्रदर्शन कौशल के घटक

प्रदर्शन कौशल में निम्नलिखित पाँच घटक सम्मिलित हैं-

i. उपयुक्त विषय, अवधारणाएँ, विचार और शिक्षण बिंदु

ii. अनुक्रम, प्रस्तुति का क्रम

iii. जोड़ तोड़ कौशल की पर्याप्तता

iv. उपयुक्त स्थिति का निर्माण

v. सामान्यीकरण

समझने की सुविधा के लिए प्रदर्शन कौशल के घटकों को नीचे संक्षेप में बताया गया है।

(1) **उपयुक्त विषय, अवधारणाएँ, विचार और शिक्षण बिंदु-** यह विषय, अवधारणाओं, विचारों और शिक्षण बिंदुओं के लिए उपयुक्त होना चाहिए।

(2) **अनुक्रम, प्रस्तुति का क्रम-** सामग्री की प्रस्तुति में अनुक्रमिक प्रक्रिया शिक्षण अधिगम गतिविधि की बेहतर तैयारी का संकेत देती है।

(3) **जोड़-तोड़ कौशल की पर्याप्तता-** प्रयोग के प्रदर्शन में यंत्र या उपकरणों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बार-बार प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

(4) **उपयुक्त स्थिति का निर्माण-** प्रदर्शन प्रक्रिया में उपयुक्त भौतिक स्थिति के साथ उचित सहायता, उपकरण, आरेख, संकेतों आदि से विचार को उचित रूप से व्यक्त करना चाहिए।

(5) **सामान्यीकरण-** जब भी प्रदर्शन समाप्त हो जाए, शिक्षक को उसका सन्दर्भ देते हुए पढ़ाये गए नियम या सिद्धांत को बताना चाहिए। इसे प्रदर्शन आधारित सामान्यीकरण कहा जा सकता है।

1.7.2 प्रदर्शन कौशल का उद्देश्य

यह कौशल सीखने के निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम बनाता है-

i. यह कक्षा को अधिक आकर्षक और शिक्षार्थियों के लिए ध्यान आकर्षित करने वाला बनाता है।

ii. यह शिक्षार्थी को वास्तविक स्थिति से जोड़ता है।

iii. शिक्षार्थी को अवधारणा और उपकरण के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाता है, एवं उपकरण के सहयोग से सीखने के अनुकूल बनाता है।

iv. यह शिक्षार्थी को अधिक सजग, सहभागी और आलोचनात्मक बनाता है।

v. शिक्षार्थी की सामान्यीकरण क्षमता में सुधार होता है और वह अवधारणाएँ आदि अधिक तत्परता से तथ्यों के साथ संभाल सकता है।

उपरोक्त उपखण्डों में प्रदर्शन करने के कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना/प्रक्रिया के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.7.3 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। आप मॉड्यूल में दी गई सामग्री से प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1. प्रदर्शन कौशल से क्या तात्पर्य है?

……

……

प्रश्न 2. प्रदर्शन कौशल शिक्षण में किस प्रकार सहायता करता है?

……

……

प्रश्न 3. अपने विषय क्षेत्र से सम्बंधित प्रदर्शन हेतु चुन कर कोई दो उपयुक्त शीर्षक लिखें।

……

……

1.7.4 चर्चा के बिंदु

- प्रदर्शन की सहायता से अवधारणाओं को पढ़ाने के क्या लाभ हैं? अपने विषय शिक्षण की नए तरीके से योजना बनाएं और सोचें, अन्वेषण करें और उन पर ध्यान दें।
- उच्च शिक्षा के कक्षा में प्रदर्शन करते समय क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? इसे अपने यहां इस्तेमाल करने से पहले अपने साथियों के साथ विस्तार से सोचकर शिक्षण योजना तैयार करें।

1.8 लेखन-बोर्ड/श्यामपट्ट उपयोग करने का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में "लेखन-बोर्ड/श्यामपट्ट उपयोग करने के कौशल" शब्द का विस्तार सम्मिलित है। यहाँ उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं।

लेखन-बोर्ड/श्यामपट्ट एक ऐसा बोर्ड होता है जो कक्षा मंच के मध्य में ऊँचें स्थान पर रखा हुआ चिकना बोर्ड होता है, और सभी विद्यार्थियों को आसानी से दिखाई देता है। यह कक्षा में विषय-सामग्री लिखने के लिए उपयोग किया जाता है। लेखन बोर्ड के **विभिन्न प्रकार** होते हैं, जैसे– ब्लैकबोर्ड/श्यामपट्ट, ग्रीन बोर्ड, व्हाइट बोर्ड और डिजिटल-बोर्ड आदि। बोर्ड चाहे किसी भी प्रकार का हो लेकिन यह कक्षा शिक्षण में सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है।

कक्षा में शिक्षण हेतु बोर्ड लेखन कौशल के विभिन्न पक्ष आगे उपभागों में दिए गए हैं :

1.8.1 बोर्ड/श्यामपट्ट लेखन कौशल के घटक

लेखन बोर्ड/श्यामपट्ट विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक पढ़ाने के लिए एक प्रभावशाली शिक्षण सहायक उपकरण है। दृश्य शिक्षण सहायक के रूप में लेखन बोर्ड का व्यापक रूप से शिक्षा और प्रशिक्षण के सभी क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है। विभिन्न प्रकार के बोर्ड, लेखन सामग्री और सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी (आई.सी.टी) का विकास चॉकबोर्ड के उपयोग को कम कर रहा है। एक अच्छा श्यामपट्ट (बोर्ड) पाठ के दौरान नोट्स और आरेख प्रदर्शित करने के लिए और कार्य धारणा में स्पष्टता हेतु इसका उपयुक्त उपयोग किया जा सकता है।

लेखन बोर्ड उपयोग करने हेतु कौशल के उप-घटक निम्न हैं, एवं इनका ध्यान बोर्ड का उपयोग करते समय रखा जाना चाहिए।

i. बोर्ड पर अक्षरों की सुगमता
ii. अक्षर का आकार और संरेखण
iii. मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालना
iv. खाली स्थान रखना
v. शुद्धता
vi. शिक्षक की स्थिति
vii. विद्यार्थियों के साथ आंखों से संपर्क
viii. बोर्ड/श्यामपट्ट की सफाई

उप-घटकों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं:

i. **बोर्ड पर अक्षरों की सुगमता-** शिक्षक को यह देखना चाहिए कि लिखावट को अधिक सुपाठ्य बनाने के लिए प्रत्येक अक्षर उचित दूरी के साथ पर्याप्त आकार का होना चाहिए।
ii. **अक्षर का आकार और संरेखण-** श्यामपट्ट पर एक समान आकार के उचित सुपाठ्य अक्षरों का उपयोग किया जाना चाहिए।

iii. **मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालना (हाइलाइट करना)-** शिक्षक को ब्लैकबोर्ड पर मुख्य बिंदुओं या शब्दों को हाइलाइट करने के लिए रेखांकित करना चाहिए। शिक्षार्थियों का ध्यान मुख्य बिन्दुओं की ओर आकृष्ट करने के लिए रंगीन चाक का उपयुक्त रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।

iv. **खाली स्थान रखना-** अक्षरों और शब्दों के बीच बीच में खाली स्थान रखना चाहिए। अक्षरों के लेखन दोहराव (ओवरराइटिंग) से भी बचना चाहिए।

v. **शुद्धता-** श्यामपट्ट पर लिखते समय वाक्यों के निर्माण में सही वर्तनी, विराम चिह्न, व्याकरण आदि के बारे में शिक्षक को सावधान रहना चाहिए।

vi. **शिक्षक की स्थिति-** श्यामपट्ट पर लिखते समय शिक्षक को एक तरफ लगभग पैतालिश डिग्री के कोण पर खड़ा होकर लिखना चाहिए जिससे बोर्ड और विद्यार्थी दोनों पर धयान रखा जा सके। इससे बोर्ड पर लिखी सामग्री विद्यार्थी द्वारा आसानी से पढ़ी जा सकती है।

vii. **विद्यार्थियों के साथ आंखों से संपर्क-** श्यामपट्ट पर लिखते समय शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों से आंखों का संपर्क बनाए रखना चाहिए। यह अनुशासन और शिक्षार्थियों का ध्यान बनाए रखता है।

viii. **बोर्ड/श्यामपट्ट की सफाई-** एक शिक्षक को बोर्ड/श्यामपट्ट को ऊपर से नीचे तक साफ करना चाहिए और कमरे में धूल नहीं फैलानी चाहिए। पाठ पूरा होने के बाद, शिक्षक को कक्षा छोड़ने से पहले पूरे बोर्ड/श्यामपट्ट को साफ करना चाहिए।

तालिका 1.8.1: लेखन बोर्ड /श्यामपट्ट उपयोग करने के कौशल के मुख्य घटक

क्र.सं.	कौशल घटकों के नाम	मुख्य विशेषताएँ
1.	हस्तलेखन की स्पष्टता	• अक्षरों के बीच पर्याप्त अंतर • शब्दों के बीच पर्याप्त जगह • लंबवत झुके हुए अक्षर • समान आकार के सभी अक्षर • अक्षरों का आकार इतना बड़ा हो कि पढ़ा जा सके • एक समान रेखा की मोटाई
2.	स्वच्छता/ कुशलता	• लाइनों के बीच पर्याप्त दूरी • श्यामपट्ट के आधार के समानांतर रेखाएँ • लेखन के ऊपर दोहराव न हो • सम्बंधित विषयों पर ध्यान केंद्रित करना
3.	उपयुक्तता/औचित्य	• अंक में निरंतरता • साधारण • रंगीन चाक बोर्ड पेन/ का उचित उपयोग • चित्रों और आरेखों की उचित प्रस्तुति • केवल महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करना
4.	श्यामपट्ट बोर्ड/ कार्य की उचित व्यवस्था	• अंतराल की व्यवस्थित योजना • प्रस्तुत की जा रही वस्तुओं के अनुक्रम को प्रदर्शित करने के लिए रिक्ति • समग्रता में संबंधित वस्तुओं को प्रस्तुत करने के लिए स्थान का समायोजन

1.8.2 लेखन बोर्ड/ श्यामपट्ट उपयोग करने के उद्देश्य

बोर्ड/श्यामपट्ट के प्रभावी उपयोग से शिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ती है। ये कौशल निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करता है :

- प्रभावी दृश्य उपकरण का उपयोग
- अवधारणाओं को समझने में स्पष्टता प्रदान करना
- प्रासंगिक बिंदुओं पर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करना
- पाठ्य-सामग्री का समग्र चित्र प्रस्तुत करना

उपरोक्त उपखण्डों में लेखन बोर्ड/श्यामपट्ट उपयोग करने के कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना/प्रक्रिया के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ कीजाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.8.3 स्व जाँच-अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1: सुगमता से आप क्या समझते हैं ?

.....

प्रश्न 2 : लेखन बोर्ड/शिक्षण के दौरान आप श्यामपट्ट कार्य को कैसे व्यवस्थित करेंगे?

.....

प्रश्न 3 : बोर्ड लेखन/श्यामपट्ट कार्य के दौरान शिक्षकों की खड़े होने की सही स्थिति क्या होती है ?

.....

1.8. 4 चर्चा के बिंदु

- श्यामपट्ट/लेखन बोर्ड पर लिखने की अपनी प्रचलित शैली को याद करें और विचार करें। कक्षा में पढ़ाते समय श्यामपट्ट पर लेखन सामग्री प्रस्तुति को बेहतर बनाने के विभिन्न तरीके क्या हो सकतें हैं? अपने शिक्षण योजना में शामिल करने के लिए उन तरीके को सोचें, अन्वेषण करें और उन पर ध्यान दें।
- श्यामपट्ट/लेखन बोर्ड पर लिखते समय क्या सावधानियां रखनी चाहिए? आपको कक्षा में अपने शिक्षार्थी को श्यामपट्ट (बोर्ड) लेखन कार्य में सम्मिलित करने के लिए क्या करना चाहिए? अपने सहकर्मी और विद्यार्थी के साथ विस्तृत रूप से विचार करें एवं सोंच करके उपयोग करें।

1.9 उदाहरणों के साथ दृष्टांत का कौशल

पहली इकाई के इस खंड में "उदाहरणों के साथ दृष्टांत का कौशल" शब्द का विस्तार सम्मिलित है। उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने हेतु मुख्य पक्ष निम्नवत हैं।

जब एक शिक्षक को सर्वोत्तम व्याख्या करने के बाद भी किसी अमूर्त विचार, अवधारणा या सिद्धांत को समझाने में कठिनाई होती है, तब वह दृष्टांतों का सहारा लेता है। शिक्षक उदाहरणों की सहायता से अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए अपने अनुभव का उपयोग करता है एवं उदाहरणों के साथ दृष्टांतों को भी जोड़कर आगे बढ़ता है। उदाहरण एवं दृष्टांत जितने सरल और स्पष्ट होंगें, सीखने की प्रक्रिया उतनी ही अधिक सुगम होगी।

उदाहरणों के साथ दृष्टांत कौशल के घटकों को उप-खण्ड 1.9.1 में आगे प्रस्तुत किया गया है-

1.9.1 उदाहरणों के साथ दृष्टांत कौशल के घटक

यह कौशल मुख्य रूप से अवधारणा चयन के साथ हीं दृष्टांत एवं उदाहरणों के चयन से संबंधित है। शिक्षण एवं अधिगम/सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी का ध्यान बनाए रखने में उदाहरण एवं दृष्टांत महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और सीखने में सहायक होते हैं। दृष्टांत कौशल के घटक के उदाहरण नीचे संक्षेप में दिए गए हैं।

1. **उदाहरण के लिए मीडिया का उपयोग-** इन उदाहरणों को मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाता है। उदाहरण के लिए, मूल रूप से मौखिक एवं गैर-मौखिक मीडिया स्वरूपों का उपयोग किया जाता है।
2. **आगमनात्मक-निगमनात्मक दृष्टिकोण**- इनको समझना और फिर उसका उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है। पहले आगमनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से अवधारणा तक उदाहरणों एवं दृष्टांतों द्वारा पहुँचा जाता है, उसके बाद में निगमनात्मक दृष्टिकोण द्वारा अवधारणा सम्बंधित उदाहरण एवं दृष्टांत पूछे जाते हैं।
3. **उचित उदाहरण-** कक्षा में शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार के उदाहरणों का उपयोग किया जाता है, लेकिन इन उदाहरणों का उपयोग करते समय कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए जैसे-
    - व्याख्या की जा रही अवधारणा या सिद्धांत से संबंधित उदाहरण ही होने चाहिए।
    - उपयोग किए जाने वाले उदाहरण विद्यार्थिओं के पूर्व अनुभव और परिपक्वता स्तर के अनुरूप होने चाहिए।
    - विद्यार्थियों का ध्यान, रुचि और जिज्ञासा बनाए रख सकने वाले उदाहरण होने चाहिए।
    - उदाहरण की उपयुक्तता का अंदाजा विद्यार्थियों के प्रत्यक्ष व्यवहार और कक्षा के समग्र वातावरण से लगाया जाना चाहिये।

तालिका 1.9.1: उदाहरणों के साथ दृष्टांत कौशल के घटक

क्र.सं.	घटक के नाम	मुख्य विशेषताएँ
1.	सरल उदाहरण तैयार करना	एक सरल उदाहरण वह है जो विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से संबंधित है। यह आयु स्तर, कक्षा स्तर और विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के अनुसार होना चाहिए।
2.	सम्बंधित उदाहरण तैयार करना	एक उदाहरण अवधारणा के अनुकूल होने पर हीं प्रासंगिक हो सकता है। अवधारणा या नियम को उस पर स्पष्ट तरीके से लागू किया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि नियम को उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है।
3.	रूचिकर उदाहरण तैयार करना	रूचिकर उदाहरण ही विद्यार्थियों की जिज्ञासा और रुचि जगा सकता है। इसका अंदाजा विद्यार्थियों के कक्षागत व्यवहार से लगाया जा सकता है। यदि विद्यार्थी उत्सुकता से उदाहरण पर ध्यान देते हैं, तभी वह वास्तव में रूचिकर है।
4.	उदाहरण के लिए उपयुक्त मीडिया का उपयोग	मीडिया की उपयुक्तता आयु स्तर, कक्षा स्तर, परिपक्वता और सीखाई गई इकाई के लिए इसकी उपयुक्तता को इंगित करती है। मीडिया की प्रकृति के बारे में निर्णय (चाहे मौखिक हो या गैर मौखिक) अवधारणा की प्रकृति पर निर्भर करती है।
5.	आगमनात्मक और निगमनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग	इसमें अवधारणा या नियम को स्पष्ट करने के लिए शिक्षक उदाहरण देता है। दिए गए उदाहरणों के आधार पर विद्यार्थी नियम एवं अवधारणा बनाते हैं। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों का परीक्षण करने के लिए उदाहरण देने को कहते हैं जिससे, वह ज्ञात कर सकें की विद्यार्थियों ने अवधारणा को ठीक से समझा है अथवा नहीं।

1.9.2 उदाहरणों के साथ दृष्टांत (चित्रण करने) के कौशल का उपयोग करने में सावधानियाँ

जब कौशल उचित रूप से उपयोग किए जाते हैं, तभी वह शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं। अनुचित तरीके से किया गया उपयोग उनकी प्रभाविता को कम करता है। इस कौशल का उपयोग करते समय यदि निम्नलिखित सावधानियां सुनिश्चित की जाएं तो यह अधिक उपयोगी होगा।

i. केवल सामग्री आधारित विशिष्ट उदाहरणों का उपयोग किया जाना चाहिए।
ii. अप्रासंगिक उदाहरणों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।
iii. व्याख्या के दौरान संबंध स्थापित करते समय चुनिन्दा शब्दों, जैसे- परिणाम स्वरूप, दूसरी ओर, क्योंकि, पहले, अब से, परन्तु, क्योंकि, चूँकि आदि का प्रयोग अवधारणा को समझाते समय उचित स्थान पर करना चाहिए।
iv. चुने गए पाठ के सभी आवश्यक भागों से सम्बंधित अवधारणाओं और उदाहरणों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
v. प्रत्येक सन्दर्भ में विशेष रूप से आरंभ और समापन टिप्पणियों का उपयोग किया जाना चाहिए।

यह कौशल मुख्य रूप से अवधारणा से संबद्ध उदाहरणों के चयन से संबंधित है। उदाहरण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और विद्यार्थियों का ध्यान बनाए रखने में सहायक होते हैं।

उपरोक्त उपखण्डों में उदाहरणों के साथ दृष्टांट कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। शिक्षण योजना/प्रक्रिया के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.9.3 स्व जाँच-अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1: अपने विषय के किसी भी विषय पर कम से कम दो प्रासंगिक उदाहरण तैयार करें।

……

……

प्रश्न 2 : मौखिक माध्यम से आपका क्या तात्पर्य है?

……

……

प्रश्न 3 : आगमनात्मक तथा निगमनात्मक दृष्टिकोण क्या है?

……

……

1.9.4 चर्चा के बिंदु

- अपने विषय क्षेत्र में शिक्षण के लिए आप एक अवधारणा सोचें और चुनें। फिर वातावरण से सम्बंधित कुछ दृष्टांत एवं उदाहरण को ढूँढे और उन्हें नोट कर अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित करें।
- विशिष्ट उदाहरणों की सहायता से सामान्यीकरण तक पहुँच और इसके उपरांत सामान्यीकरण आधारित पुनः उदाहरणों को देने से आपका क्या तात्पर्य है? आप इसे उदाहरणों के साथ चित्रित करने में कैसे उपयोग कर सकते हैं? इस विषय में अपने साथियों के साथ विस्तृत रूप से चर्चा करने के उपरांत अपनी शिक्षण योजना में इसका उपयोग करें।

1.10. पाठ समापन करने का कौशल

प्रथम इकाई के इस खंड में "पाठ समापन करने का कौशल" के तात्पर्य विस्तार से बताया गया है। यहाँ उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा में इसका उपयोग करने हेतु कुछ मुख्य बिंदु आगे दिये गए हैं।

पाठ समापन कौशल मूलतः विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए पाठ के अंतर्निहित मुख्य बिंदुओं को कक्षा के अंतिम समय से पूर्व पाठ को सारांशित करने की प्रक्रिया है। शिक्षण उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है? शिक्षण सफल रहा है या नहीं? सीखने के अनुभव प्रदान किए गए हैं या नहीं? जैसे सभी प्रश्नों का उत्तर शिक्षक द्वारा पाठ समापन कौशल के माध्यम से किया जा सकता है। विद्यार्थियों को क्या जानना चाहिए और क्या करने में सक्षम होना चाहिए इससे सम्बंधित पाठ के सार को भी यह संदर्भित करता है। इस प्रकार शिक्षक द्वारा पाठ समापन का उपयोग सिखाने के अनुक्रम के अंत में पूर्व में बताई गई अवधारणा/विषयवस्तु पर ध्यान केंद्रित/आकर्षित करके पाठ समापन हेतु किया जाता है। अतः पाठ समापन में, आप उन मुख्य बिंदुओं और अवधारणाओं को एक साथ व्यवस्थित, एकीकृत करके जोड़ते हैं, जो शिक्षार्थियों को समझाने के लिए आपने विद्यार्थियों को बताया था और जो उसके भीतर विद्यमान हैं। इस प्रकार एक अच्छी तरह से समाप्त किया गया पाठ विद्यार्थियों के सीखने और प्रतिधारण की क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए समापन के क्रम में यह अति आवश्यक है कि आप अपने पाठ को दोहराएँ और उसका मूल्यांकन भी करें। यह सब करना शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य और सम्बंधित अपेक्षित परिणाम पर निर्भर होता है।

1.10.1 पाठ समापन करने के लिए प्रयोग की जानी वाली विधियाँ

एकपो (2014) ने पाठ समापन करने के लिए निम्नलिखित विधियों को कक्षा में लागू किये जाने की बात की है-

पारंपरिक शिक्षण के लिए तकनीक

- शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे पाठ के सारांश/मुख्य अवधारणा पर आधारित चयनित बिंदु पर नोट्स बनाने का कार्य विद्यार्थियों को देकर उसका उपयोग पाठ को समाप्त करने हेतु कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को श्रुतलेख के माध्यम से पूरे समापन नोट्स भी दिए जा सकते हैं। परन्तु इससे रटंत अधिगम को भी बढ़ावा मिलता है।
- विद्यार्थियों को पाठ का मौखिक पुनर्कथन करने के लिए भी कहा जा सकता है जो कि उनकी समझ को भी बढ़ाती है।
- विद्यार्थियों को पढ़ाई गयी सामग्री को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी कक्षा में आमंत्रित किया जा सकता है।
- शिक्षक द्वारा पाठ समाप्त करने के लिए खेल और अनुकरण का उपयोग भी किया जा सकता है।

शिक्षार्थी अनुकूल दृष्टिकोण

कुछ दृष्टिकोण शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित होते हैं, इसलिए वे शिक्षार्थी अनुकूल कहे जाते हैं, जैसे कि– क्षेत्र भ्रमण (फील्ड ट्रिप), व्यक्तिगत परियोजनाएँ, समूह परियोजनाएँ आदि। इसमें समूह बातचीत, वाद-विवाद, प्रस्तुतियाँ, सारांशिकरण अभ्यास, अनुभव साझा करना आदि को सम्मिलित करते हैं। इसलिए यह सब शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी होते हैं। इसके अलावा समापन के कार्य को संक्षिप्तिकरण भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें पढ़ाए गए विषय पर केंद्रित प्रश्नों और उत्तरों के रूप में प्रतिक्रिया भी सम्मिलित की जा सकती है।

1.10.2 पाठ समापन के प्रकार

शिक्षक द्वारा आमतौर पर तीन प्रकार के समापन का उपयोग अनुदेशात्मक वितरण प्रक्रिया में किया जा सकता है-

i. **अनुदेशात्मक समापन-** इस प्रकार के समापन में, आपको पिछले ज्ञान और नए ज्ञान के बीच की कड़ी को इंगित करना चाहिए।

ii. **संज्ञानात्मक समापन-** इस प्रकार के समापन में प्रमुख बिंदुओं का तर्कसंगत रुप से सारांश तैयार किया जाता है।

iii. **सामाजिक समापन**- इस प्रकार के समापन में पुरस्कार, प्रशंसा और प्रोत्साहन का उपयोग किया जाता है।

1.10.3 पाठ समापन कौशल के घटक

i. प्रश्न, कथन आदि द्वारा सीखने का समेकन।

ii. कक्षा में जो भी सामग्री प्रस्तुत की गई है उसको विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान के साथ जोड़ना।

iii. कक्षा में अर्जित ज्ञान एवं कौशल का अनुप्रयोग कराना।

iv. पुरस्कार और प्रशंसा तथा भविष्य में उपयोगिता के माध्यम से उपलब्धि की भावना पैदा करना।

1.10.4 पाठ समापन कौशल के उद्देश्य/ महत्व

शिक्षण प्रक्रिया में पाठ समापन कौशल के कुछ महत्व इस प्रकार हैं-

i. सामाजिक और संज्ञानात्मक पहलुओं में उपलब्धि और निपुणता के मुख्य बिंदुओं को स्थापित करना और उनसे जोड़ना।

ii. पढ़ाए गए पाठ की पुनरावृत्ति करना और उस पर ध्यान देना।

iii. पाठ के दौरान सीखी गई विशिष्ट अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करना।

उपरोक्त उपखण्डों में पाठ समापन कौशल के बारे में संक्षेप में बताया गया है। यह अति आवश्यक कौशल है। शिक्षण योजना/प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा में इसका उपयोग किया जा सकता है। आप पढ़ने के बाद अपनी समझ की जाँच करने के लिए दिए गए स्व-जाँच अभ्यास से आगे बढ़ सकते हैं।

1.10.5 स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दे, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न 1: पाठ समापन का उपयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

प्रश्न 2: पाठ समापन कौशल के घटक कौन से हैं ?

.....

.....

1.10.5 चर्चा के बिंदु

- शिक्षण के दौरान प्रभावी पाठ समापन करने के विभिन्न तरीके क्या हो सकते हैं? सोचकर, अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित करें।
- कक्षा में पाठ समापन करते समय क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। सोचकर उन्हें कक्षा में अपनाये।

शिक्षकों के व्यक्तिगत विकास के लिए मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)

मॉड्यूल की इस इकाई में उच्च शिक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के अंतर्गत मूलतः शिक्षकों की भूमिका और उनके व्यक्तिगत विकास से संबंधित कुछ मृदु कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) की चर्चा की गई है। आगे के भागों में कुछ महत्वपूर्ण मृदु कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) का विवरण दिया गया हैं।

शिक्षा जगत में **मृदु कौशल** आधारभूत कौशल समुच्चय का प्रतिनिधित्व करते हैं। हाल के वर्षों में, शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों की ओर से मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसे न केवल शिक्षकों के लिए बल्कि शिक्षार्थियों के लिए भी एक विशेष गुण माना जाता है। चूँकि ये कौशल व्यक्तित्व की मधुरता से सम्बंधित होतें हैं इसलिए इन्हें **मधुर कौशल** भी कहा जा सकता है। भाषा शिक्षण के विषय में, सॉफ्ट स्किल्स/मधुर कौशल न केवल शिक्षार्थियों के साथ मधुर संबंध बनाने एवं उन्हें मजबूत करने, संघर्ष एवं द्वंद्व की स्थितियों को आसानी से समझने और सुलझाने, भावनाओं को समझने और आदर के साथ स्वीकार कर उचित व्यवहार करने आदि हेतु अत्यंत लाभप्रद होते हैं बल्कि वे इस तरह के व्यवहार कौशल द्वारा कक्षा में शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं।

उपरोक्त के सन्दर्भ में **व्यक्तिगत विकास** का तात्पर्य शिक्षक के सामान्य व्यवहार में कुछ गुणों के समावेश करने से है, जैसे की- दूसरे की भावना को समझकर स्वयं का संचालन करने की क्षमता, निराशा के भाव को उत्साह में परिवर्तित करने की क्षमता, सक्रीय रूप से सहभागिता की क्षमता, सभी को साथ लेकर आगे बढ़ने की क्षमता आदि से है। यह सभी गुण विभिन्न प्रकार के मधुर कौशलों/सॉफ्ट स्किल्स

के ही भाग हैं। इस कौशल के घटक समग्रता के साथ वास्तव में शिक्षक के व्यक्तित्व का निखार करते हैं, और उसे एक अच्छे मनुष्य के रूप में तैयार करते हैं। ऐसा शिक्षक अपनी कक्षा में शिक्षण कौशलों को सफलता पूर्वक उपयोग करके में सक्षम होता है, एवं शिक्षण प्रक्रिया में सदैव सकारात्मक परिणाम प्राप्त करता है।

2.1 व्यक्तिगत विकास के लिए मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)

शिक्षा जगत में मृदु कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) एक आधारभूत कौशल समुच्चय का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में मृदु/मधुर कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) को सम्मिलित करना शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए एक सफल समाधान प्रस्तुत करता है एवं साथ ही साथ दोनों के लिए सदैव लाभकारी भी होता है। व्यक्तिगत विकास के लिए इस इन कौशलों में से चौबीस चुनिन्दा आवश्यक कौशलों की सूची नीचे के भागों में दी गई है :

1. उत्साह

उत्साह का तात्पर्य किसी भी कार्य को करने की अन्तर्निहित स्वयं की स्वाभाविक उर्जा से है। इसके द्वारा व्यक्ति की कार्य में संलग्नता एवं सक्रियता लगातार बनी रहती है। उत्साह किसी भी कार्य या गतिविधि को करने की कुंजी होती है। अतः प्रत्येक शिक्षक को उत्साही होना चाहिए। इसे आसानी से समझने के लिए आप अपने कॉलेज/विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के बारे में सोचें और विचार करें कि उनमे यह गुण विद्यमान थे या नहीं? स्वाभाविक रूप से आप उन्हें बहुत उत्साही पायेंगें। इसी प्रकार आपको भी अपने विद्यार्थियों के प्रति उत्साही दृष्टिकोण और उत्साह स्तर को बनाये रखने की आवश्यकता होगी।

2. नेतृत्व कुशलता

नेतृत्व का अर्थ है आगे ले जाने की क्षमता। एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों का नेतृत्व कर मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है; वे विभिन्न व्यक्तियों, यहाँ तक कि

अवज्ञाकारी शिक्षार्थियों को भी उचित दिशा दिखा सकता है, और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शित कर सकता है। विद्यार्थियों के लिए वह एक उदाहरण स्थापित करके एक सकारात्मक रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकता है। शिक्षक के निम्नलिखित गुण उसके नेतृत्व कौशल को परिलक्षित करते हैं -

- वह अपने किसी भी विद्यार्थी को पीछे नहीं छोड़ता है।
- वह प्रत्येक विद्यार्थी का ध्यान आकर्षित करता है।
- वह सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित करता है।
- वह सभी को सक्रिय रखता है।
- वह प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सतर्क और ऊर्जावान होता है।
- वह कभी निराश नहीं होता।
- वह विषय सामग्री और उनसे जुड़ी वास्तविक जीवन की चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- वह प्रेरणादायक होता है।
- वह अपनी कक्षा को व्यवस्थित करने के लिए अधिकार और कार्यों को संतुलित करता है।
- वह एक रोल मॉडल के रूप में उभरता है।

3. संगठनात्मक कुशलता

शिक्षकों के पास कक्षा नियोजन से लेकर गतिविधियों और अंकन तक बहुत कुछ महत्वपूर्ण कार्य होते हैं। अपनी भूमिका में सफल होने के लिए उनके पास बृहत संगठनात्मक क्षमताएँ होनी चाहिए। उन्हें इन विषयों के शीर्ष पर रहने और समय पर अपनी भूमिकाओं को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षकों के कई कर्तव्य हैं, जिनमें पाठ योजना बनाना, असाइनमेंट तैयार करना, ग्रेडिंग करना,

पेपर बनाना, परीक्षा लेना, क्षेत्र यात्राओं को आयोजित करना और अपने विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की देखभाल करना सम्मिलित हैं। संगठनात्मक कौशल शिक्षक को उसकी समय सीमा के अनुसार इन सभी कार्यों को पूरा करने में सहायता कर सकता है। यह सब निश्चित ही उसे कक्षा में व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग प्रदान करता है।

4. आदरभाव

एक अच्छे शिक्षक को कक्षा में सम्मानजनक वाक्यों (स्वर, लहजा) का प्रयोग करना चाहिए। इससे विद्यार्थी अपने मूल्यों और विचारों को प्रस्तुत करने में सहजता अनुभव करते हैं। इस प्रकार इससे उनके सहपाठी भी अच्छे श्रोता बनने और दूसरों के विचारों का सम्मान करने का गुण सीख जाते हैं। इस प्रकार के आदर भाव द्वारा अनिवार्य रूप से, शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित सीखने का वातावरण बनाता है।

5. समूह में कार्य करने की कुशलता

शिक्षक को कभी अकेले तो कभी एक समूह के अंग के रूप में महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य करना पड़ता है। इसलिए कठिनाइयों को हल करने और समग्र शिक्षण व्यवस्था विकसित करने हेतु उन्हें अन्य व्यक्तियों के साथ सहयोग भी करना चाहिए। सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए, उन्हें अपने विद्यार्थियों को भी यह अनुभव कराने की आवश्यकता होगी कि वे एक व्यक्ति होने के साथ ही एक समूह का हिस्सा भी हैं।

6. संचार

शिक्षकों के पास विशेष संचार कौशल होने चाहिए। उन्हें निम्नलिखित कौशल अपनाने चाहिए-

i. उन्हें प्रभावी श्रोता होना चाहिए। उन्हें प्रभावी वक्ता होना चाहिए।

ii. उन्हें प्रभावी पाठक होना चाहिए।

iii. उन्हें विभिन्न प्रकार के मीडिया के उपयोग में कुशल होना चाहिए।

iv. उन्हें संचार परिवेश को सम्भालने में प्रभावी होना चाहिए।

v. उन्हें संचार कार्य में बाधक तत्वों को निर्मूल करने और फीडबैक लेने में प्रभावी होना चाहिए।

vi. उन्हें प्रभावशाली प्रेरक के रुप में होना चाहिए।

vii. उन्हें नई शुरुआत करने के लिए भी हमेशा तैयार होना चाहिए।

7. अनुकूलनशीलता

अनुकूलनशीलता का तात्पर्य किसी भी विपरीत स्थिति में सामंजस्य के साथ आगे बढ़ने की क्षमता है। अप्रत्याशित परिदृश्यों के प्रति अनुकूल होना महत्वपूर्ण है। आप कभी नहीं जानते कि आपकी कक्षा में हर दिन क्या होगा, और आपको प्रत्येक मुद्दे को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और शीघ्रता से समाधान निकालने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, यदि आप की कक्षा में यदि कोई विद्यार्थी बीमार हो जाय या व्यवधान करता है, तो शिक्षक को शांत रहते हुए हस्तक्षेप एवं समाधान करना चाहिए और उस विद्यार्थी को कक्षा से पुनः जोड़ना चाहिए।

8. अंतरवैयक्तिक कुशलता

अंतरवैयक्तिक कुशलता एक औसत शिक्षक को एक अछे शिक्षक के रूप में बदल सकती है। एक शिक्षक जिसका झुकाव दूसरों की मदद करने की ओर है, वह मधुर संबंध बनाएगा, जो बदले में शिक्षार्थी को सीखने में बढ़ावा देगा। एक आकर्षक व्यक्तित्व वाला एक सुखद शिक्षक सजग और उत्साही विद्यार्थियों का निर्माण

करता है। इसमें करुणा, सहानुभूति और संवेदनशीलता जैसे गुणों की आवश्यकता है। ये सभी एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए पारस्परिक गुणों को बढ़ावा देते हैं। यह भाव रखें कि, दूसरों की मदद करें और गर्व महसूस करें। एक शिक्षक को विद्यार्थियों के विविध समूह के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

9. रचनात्मकता

रचनात्मकता का तात्पर्य नवीन तरीकों से शिक्षण करने से है। शिक्षकों को विद्यार्थिओं का ध्यान और भागीदारी बनाए रखने के लिए नवाचार की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों की रुचि और ध्यान केंद्रित रखने के लिए, शिक्षकों को कई तरह की रणनीतियां बनानी चाहिए, जैसे कि भूमिका निभाना, कहानी सुनाना या अन्य मनोरंजक शिक्षण गतिविधियाँ। शिक्षक अपनी रचनात्मकता का उपयोग करके अपने विद्यार्थियों को सम्मिलित करने के लिए नए तरीके खोज सकते हैं। जो विद्यार्थी किसी भी तरह की रचनात्मक सोच का उपयोग करके शिक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित होते है उन्हें विषय सामग्री को याद रखने की संभावना अधिक होती है।

10. स्व-मूल्यांकन

विद्यार्थियों की रुचि और जुड़ाव बनाए रखने के लिए, शिक्षकों को, विशेष रूप से रचनात्मक होने की आवश्यकता है। कक्षा को सक्रीय बनाये रखने और ध्यान आकर्षित रखने के लिए आपको कई तरह की युक्तियों के साथ कक्षा में जाने की आवश्यकता होगी। सीखने की गतिविधियाँ व्यवसायिक रूप से उचित दिशा में आगे बढ़ाने और उच्च स्थान पाने के लिए आपको स्वयं का आँकलन करना होगा, और स्वयं की नए सिरे से गुणवत्ता निर्मित करनी होगी। आपको अपना अहंकार एक तरफ रखना होगा और आत्म विश्लेषण करना होगा कि आप कहाँ-कहाँ गलत हुए हैं और सुधार कर आपकी कक्षाओं को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।

11. धैर्यवान होना

धैर्य का तात्पर्य धीरज रखकर आगे बढ़ने से है। युवाओं के साथ काम करते समय धैर्य महत्वपूर्ण है। आमतौर पर इसकी जरुरत तब पड़ती है जब विद्यार्थी अच्छी तरह से व्यवहार नहीं करते, जब विद्यार्थी आपकी बात नहीं समझ पाते और जब उनका ध्यान कही और होता है। ऐसे में आपको धैर्य रखने की आवश्यकता होती है। ऐसे में आपको चीजों को समझाने के वैकल्पिक तरीकों की खोज करनी चाहिए। जब विद्यार्थी कक्षा व्यवहार और बौद्धिक क्षमताओं में विविधता प्रदर्शित करते हैं तब भी धैर्य सहायक होता है। उदाहरण के लिए, कुछ विद्यार्थी किसी नई अवधारणा को तुरंत समझ सकते हैं, जबकि अन्य को कुछ समय लगता है। धैर्य का उपयोग विद्यार्थी की समझ परख करने के लिए भी जरूर है।

12. सहानुभूति

यदि आप अपने विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं, तो वे अपनी भावनाओं को व्यवस्थित करना सीखेंगे और एक दूसरे के साथ देखभाल के साथ व्यवहार करेंगे। आपके विद्यार्थियों में मजबूत सामाजिक-भावनात्मक कौशल का निर्माण आपकी कक्षा के साथ-साथ भविष्य की कक्षाओं को भी लाभान्वित करेगा। शिक्षक सहानुभूति का उपयोग विद्यार्थियों से जुड़ने और उनके अनुभवों को समझने के लिए कर सकता है। ऐसे विद्यार्थी जो विद्यालय या घर पर चुनौतीपूर्ण समय का अनुभव कर रहे होते हैं उनके लिए भी शिक्षक की सहानुभूति जरुरी है। शिक्षक करुणामय दृष्टिकोण से उनके कार्यों के कारणों पर विचार करके कक्षा परिवेश को बेहतर बना सकते हैं।

13. आलोचनात्मक सोच

शिक्षक आमतौर पर अल्प समय के भीतर ही विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों से निपटने के लिए दबाव में होते हैं। जैसे- अवसर आने पर चुनौतीपूर्ण प्रश्नों का

उत्तर देना, तर्कों को हल करना, नई पाठ योजनाएँ विकसित करना, खेलना, पढ़ाना और विद्यार्थियों या सहकर्मियों के बीच अन्य व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करना सामान्य उदाहरण हैं।

14. आत्मविश्वास

अत्मविश्वास का तात्पर्य व्यक्ति का किसी कार्य को करने में अपने प्रति स्वयं अपने आप पर विश्वास होने से है। आप तब तक शिक्षक नहीं बन सकते जब तक आप में कक्षा में अपने विद्यार्थियों से बात करने का आत्मविश्वास नहीं है। आपके पास मृदु कौशलों से पूर्ण एक मजबूत व्यक्तित्व होना चाहिए जो प्रश्नों का अनुकूल उत्तर देने और अपने विद्यार्थियों में भी आत्मविश्वास पैदा करने में सक्षम हो।

15. प्रतिबद्धता

एक शिक्षक अपनी कक्षा में जाकर अपने व्यक्तिगत जीवन की परेशानियों को नहीं बता सकते हैं, क्योंकि वहाँ वे अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं। यदि आप एक अच्छे शिक्षक बनना चाहते हैं तो आपको अपने व्यवसाय और अपनी कक्षा के प्रति समर्पित होना चाहिए। आपको अपने विद्यार्थियों के जीवन को परिवर्तित करने और पढ़ाने के बारे में संवेदनशील हीं नहीं बल्कि प्रतिबद्ध होना चाहिए।

16. विनोदपूर्णता

यह एक ऐसी चीज है जो आपको खुश रखती है। शिक्षक यदि अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ना चाहते हैं तो विनोदपूर्ण भाव का होना बहुत उपयोगी होता है। आपको उनके साथ हँसने और पाठ को यथासंभव मजेदार बनाने में सक्षम होना चाहिए। विद्यार्थी जब खुश होते हैं तो वे सीखने के लिए अधिक आतुर होते हैं।

17. सुलभता

सुलभ होना एक महत्वपूर्ण गुण है। आपके विद्यार्थियों को आपसे प्रश्न पूछने और समस्या होने पर आप पर विश्वास करने में सहज महसूस करना चाहिए। उन्हें

असफल होने या कुछ अनुचित न कह दें के भाव से नहीं डरना चाहिए। अच्छे शिक्षकों का एक ऐसा आकर्षक व्यक्तित्व होता है जो विद्यार्थियों को खुलेपन और पाठ में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

18. कल्पनाशीलता

यदि आप पढ़ते हैं, अन्वेषण करते हैं, सोचते हैं, संवेदनशील होते हैं, और अलग तरह से सोचते हैं, तो आप कल्पनाशील हो सकते हैं। आप पंचतंत्र आदि साहित्य पढ़ सकते हैं जोकि जीवन की समस्याओं और उनके बारे में समाधान करने में सहायता देता है।

19. समय प्रबंधन

एक शिक्षक होने के नाते बेहतर समय प्रबंधन क्षमता की आवश्यकता होती है। आपको न केवल अपने विद्यार्थियों को पढ़ाना होता है, बल्कि आपको कक्षा के बाद असाइनमेंट की समीक्षा करने और उन पर निशान लगाने के साथ-साथ अपने पाठों को व्यवस्थित करने के लिए भी अलग से समय निर्धारित करना चाहिए। हालाँकि, आपको आराम करने और अपने आप के लिए भी कुछ करने के लिए कुछ व्यक्तिगत समय निर्धारित करने की भी आवश्यकता होती है। यह सब समय प्रबंधन की माँग करता है।

20. कंप्यूटर/ऑनलाइन कौशलता

आपको ऊपर सूचीबद्ध सभी कौशलों के अतिरिक्त तकनीकी रूप से उन्नत होने की भी आवश्यकता होगी, जिससे शिक्षण कार्य और अन्य कार्यों की योजना बनाने के लिए स्प्रेडशीट का निश्चित रूप से उपयोग किया जा सके। आपको एक ऑनलाइन कक्षा का संचालन करने और सभी का ध्यान बनाए रखने में भी सुचारू रूप में सक्षम होने की आवश्यकता होगी, क्योंकि अब शिक्षा का कुछ भाग ऑनलाइन हो गया है।

21. अनुशासनशीलता

अनुशासन का तात्पर्य उचित अनुचित का भेद करके व्यवस्था बनाये रखने से है। जब कक्षा को व्यवस्थित करने की बात आती है, तो आप बहुत कोमल नहीं हो सकते। जब आवश्यक हो, आपको दृढ़ होना पड़ेगा और स्वच्छंद विद्यार्थी को अनुशासित करना होगा। आपको समय-समय पर 'गंभीर' भाव अपनाने होगें, चाहे वह कार्य कक्षा नियंत्रण के लिए हो या अतिरिक्त संस्थागत कार्य हेतु।

22. सहनशीलता

शिक्षक में शारीरिक और मानसिक सहनशक्ति होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप को दिन के अधिकांश समय अपने पैरों पर खड़े रहकर शिक्षण कार्य करना होता है। आपको एक लंबा कार्य दिवस बिताने के लिए शारीरिक रूप से मजबूत होने की आवश्यकता होती है। साथ ही, आपको दिन में आने वाली किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए भावनात्मक रूप से मजबूत होने की आवश्यकता भी होती है।

23. लगनशीलता

भाषा, कला, विज्ञान और इतिहास आदि सभी विषयों के लिए लगनशीलता शिक्षकों को आकर्षक पाठ योजना एवं क्रियान्वन में मदद कर सकती है। अपने विषय के लिए वास्तविक उत्साह प्रदर्शित करके शिक्षक विद्यार्थियों को सीखने और उनके द्वारा खोजे जा रहे विषयों या पुस्तकों के बारे में जानने के लिए प्रेरित करने में मदद कर सकते हैं। इससे शिक्षकों को अत्यधिक कार्य संतुष्टि प्राप्त करने में भी मदद मिल सकती है।

24. बहुकार्य कुशलता

शिक्षण केवल पाठ्यक्रम में लगे रहने और परीक्षा के प्रश्नपत्रों की ग्रेडिंग करने तक ही सीमित नहीं होता है, बल्कि इसके अतिरिक्त उसे विविध कार्य भी करने होते हैं। एक अच्छे शिक्षक को अपनी नजर अपने चारों ओर रखनी चाहिए और अपने विद्यार्थियों के व्यवहार को देखने में सक्षम और पढ़ाते समय उनका ध्यान बनाए रखना चाहिए। उन्हें अपने कक्षा के बाद सप्ताह की योजना बनाने के साथ-साथ परीक्षा कराने और असाइनमेंट लिखने और ग्रेड देने की भी आवश्यकता होती है। इस तरह एक अच्छा शिक्षक कई कार्यो को बिना थके एक साथ संपन्न करने में सक्षम होता है यही बहुकार्य कुशलता है।

2.2 द्वितीय इकाई आधारित स्व-जाँच अभ्यास

स्वयं की प्रगति की जाँच

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें, मॉड्यूल में दी गई सामग्री से आप प्रश्नों से संबंधित अपने उत्तर भी देख सकते हैं।

प्रश्न1. मृदु कौशलों का उपयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

प्रश्न 2 : मृदु कौशलों के नाम लिखें?

.....

.....

2.3 द्वितीय इकाई आधारित चर्चा के बिंदु

प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षण कौशलों के साथ-साथ किस प्रकार के गुण शिक्षक को सफल बनाते हैं? अपने पूर्ववर्ती अनुभव के आधार पर सोचकर आपस में सघन चर्चा करें एवं उन गुणों को अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित भी करें।

ग्रंथ-सूची एवं पठनीय सामग्री

1. Adedapo, A. (2010). Microteaching practicum: A Vehicle of Teacher Training. In S.A. Taiwo and O. K. Omoniyi (Eds), **Resource Utilization in Education**, Oyo: Folayemi Christlike Venture.
2. Aggarwal, J.C. (2015). **Educational Technology**. Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
3. Anderson, Krathwohl et al. (2001): **A Taxonomy for learning & teaching & assessing: A revision of Bloom's Taxonomy of educational objectives**
4. Bloom, B.S. (ED.), Engelhart, M.D. Frust, E.J. Hill, W.H., & Krathwohl, D.R. (1956). **Taxonomy of educational objectives, handbook I: Cognitive domain**. New York: David McKay
5. Dick, W. & Cary, L. (1990).**The Systematic Design of Instruction**, Third Edition, Harper Collins.
6. Ekpo, C. M. (2014). Lesson Closure. In George S. Ibe-Bassey, Comfort M. Ekpo and Beshel C. Ushie (eds). **Rudiments of Micro-Teaching: Theory and Practice**. University of Calabar Press
7. Jangira, N.K., & Singh, A. (1982).**Core Teaching Skills**, NCERT, New Delhi.
8. Kenneth, D.M. (2001),**Classroom teaching skills (5thed.)**. Mc Graw-hill, New York.
9. Keziah, A.A. (2007). **Micro Teaching; a Practice on Teaching Skills**. Port-Harcourt: Pearl Publishers.
10. Kibler, R.J., Cegala, D.J., Barker, L.L., & Miles, D.T. (1974). **Objectives for Instruction and Evaluation**. (Rev. Ed.) Boston: Allyn and Bacon.
11. Krathwohl, D. R. , Bloom, B. S., and Masai, B. B. (1964). **Taxonomy of educational objectives, handbook II: Affective domain**. New York: David McKay.
12. Passi, B.K., (1936),**Becoming Better Teacher**, Centre of Advanced Study in Education, M.S. University of Baroda
13. Rashid, M. (1999). **Study Guide on Teaching strategies,** code no. 846, units1-9 2nded Islamabad AIOU.
14. Samuel, J. & Job, G. (2011). Micro Teaching at a Glance. Joe Mankpa Publishers, Owerri, Nigeria.

15. Singh, S.K. (2024).**उच्च शिक्षा में विज्ञान, गणित, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान तथा भाषा हेतु शिक्षण-विधि मॉड्यूल,**Self- published , October, digital download and online e-module,Pp.120,ISBN: 978-93-341-4659-2

16. Singh, S.K. (2024).Module for Methods of Teaching Science, Mathematics, Humanities and Social Sciences, and Languages in Higher Education**,**Self- published April, digital download and online e-module **,**ISBN: 9789334050233**(43) Module for Methods of Teaching Final upload Sunil BHU | Sunil Kumar Singh - Academia.edu** retrieved on 12 October 2024.

17. Singh, S.K. (2024).Module on teaching skills for professional enhancement of teachers in higher education**,** Self-published in February , digital download and online e-module, ISBN:9789334022780**(43) MODULE ON TEACHING SKILLS FOR PROFESSIONAL ENHANCEMENT OF TEACHERS IN HIGHER EDUCATION | Sunil Kumar Singh - Academia.edu**retrieved on 12 October 2024.

18. Step by step guide to Creating an Online Module. (n.d.). Retrieved August 5, 2020, from **https://modulemaking.commons.gc.cuny.edu/step-by-step-guide/**

19. Teaching Skills: Definition and Examples. (2001, June 29) **https://www.glassdoor.com/blog/guide/teaching-skills/**

डा. सुनील कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वरिष्ठ आचार्य हैं। उनका लगभग तीस वर्षो का शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण एवं शोध का अनुभव है। उन्होंने अपने सेवा काल में इंटर्नशिप एवं अभ्यास शिक्षण का विशेष अनुभव प्राप्त किया है। उनका विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में प्रशासन एवं शिक्षण का अनुभव है। उनकी लगभग 20 पुस्तकें/मोनोग्राफ/सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित हैं। उन्होंने लगभग 40 प्रशिक्षण कार्यक्रम/संगोष्ठी आयोजित की हैं, एवं 150 से अधिक संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं में सहभागिता की है। अब तक कुल 200 श्रोत-व्याख्यान दिये हैं। अतः अपने अनुभवों के आधार पर उनका मानना है की उच्च शिक्षा के शिक्षकों एवं उच्च शिक्षा में रूचि रखने वालों को शिक्षण-कौशलों और शिक्षण-विधियों का प्रारंभिक ज्ञान लाभप्रद है। इसको ध्यान में रखकर प्रस्तुत मॉड्यूल को 'डिजिटल डाउनलोड एवं ऑनलाइन' रूप में सभी जिज्ञासुओं हेतु प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशक :
प्रो. सुनील कुमार सिंह
शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005, उत्तर प्रदेश, भारत,
सम्पर्क- 7985894168, 9450580931, ईमेल : sunil.kr.edu@gmail.com